मई 2021, वर्ष 2 अंक 4 • UPHIN/2020/78911 • www.newsbucket.in • मूल्य 10 रुपये /-

न्यूज़ बकेट

कोरोना का कहर: वैक्सीन को लेकर उलझन! - 19

फिल्म 'चेहरे' के पोस्टर पर क्यों नहीं दिखीं थीं रिया चक्रवर्ती? प्रोड्यूसर ने अब बताई असली वजह! - 23

कोरोना पॉजिटिव आने के बाद मरीज को कब होना चाहिए हॉस्पिटल में भर्ती? - 35

ऑक्सीजन की मारामारी!

देश में चल रही ऑक्सीजन और दवाओं की कमी को पूरा करने के लिए कोशिशेंजारी हैं - नरेन्द्र मोदी

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का दावा न बेड की कमी, न ऑक्सीजन की!

अनावश्यक प्रॉजेक्ट पर खर्च करने की बजाए वैक्सीन, ऑक्सीजन व अन्य स्वास्थ्य सेवाओं पर ध्यान दे सरकार - राहुल गाँधी

ऑक्सीजन की कमी को लेकर योगी जी झूठ मत बोलिए, खबरें आपकी नाकामी की गवाही दे रही हैं - अखिलेश यादव

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संसदीय क्षेत्र में

बनायें अपने सपनों का आशियाना,

सस्ते दामों में प्लॉट उपल!

साक्षी इंफ्रासिटी प्रा0 लि0 क्रय विक्रय केंद्र

सारनाथ, भुल्लनपुर, केशरीपुर, रोहनिया, रामनगर,टेंगड़ामोड़, सामनेघाट, पटेलनगर, पहड़िया में ज़मीन, मकान, प्लॉट व फॉर्महॉउस हेतु संम्पर्क करें।

बाबा शॉपिंग काम्प्लेक्स, बीएचयू रोड, लंका, वाराणसी
ओम साई की कुटी, अकथा तिराहा, वाराणसी

मोबाइल न. 7905288635, 0542-2581888

भीतर

93वें ऑस्कर सामारोह में इरफान खान और भानु अथैया को किया गया याद!

अमेरिका के लॉस एंजिल्स में आयोजित 93वें एकेडमी अवॉर्ड समारोह में जाने-माने दिवगंत अभिनेता इरफान खान को याद किया गया। पढ़े पूरी खबर, **पेज न. 26 पर..**

अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, सिंगापुर, दुबई समेत दुनिया के तमाम मुल्कों से भारत की मदद के लिए हाथ आगे बढ़े हैं। कहीं से दवाएं, कहीं ऑक्सीजन प्लांट तो कही से वेंटिलेटर समेत दूसरे उपकरण भेजे जा रहे हैं। पढ़े पूरी खबर, **पेज न. 20 पर...**

भारत को संकट में घिरा देख दुनिया ने बढ़ाए मदद को हाथ, जानें अब तक किन देशों से आई राहत!

हर 100 साल में होती है कोरोना जैसी महामारी,आंकड़ें देख आप भी कहेंगे- ये प्रकृति का अपना तरीका है!

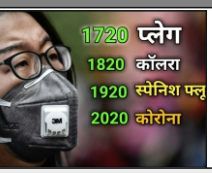

ये सिलसिला पिछले 400 सालों से चलता आ रहा है। आइए जानतें हैं 400 सालों से लोगों को किन-किन महामारियों का सामना करना पड़ा है।पढ़े पूरी खबर, **पेज न. 15 पर...**

संपादकीय.....04
कवर स्टोरी.....05-10
विचार.....11-14
मुद्दा.....15-19
राजनीति.....20-22
मनोरंजन.....23-26
साक्षात्कार.....27-28
रिपोर्ट.....29
खेल जगत.....30-31
टेक ज्ञान.....32-33
नौकरी.....34
स्वास्थ्य.....35
धार्मिक.....36
राशिफल.....37
न्यूज़ हेडलाइंस.....38-45
टाइम-पास.....46

न्यूज़ बकेट

www.newsbucket.in

मई 2021

वर्ष 2 अंक 4

संस्थापक संरक्षक
संरक्षक : मिथिलेश पटेल
प्रधान संपादक : राजू श्रीवास्तव
वरिष्ठ पत्रकार : रमेश उपाध्याय
पत्रकार : विकास कुमार श्रीवास्तव
फोटो एडिटर : सुधीर कुमार गुप्ता
छायाकार : धीरेन्द्र प्रताप

कानूनी सलाहकार
भूपेश पाठक : **अधिवक्ता**

प्रधान कार्यालय (FIVE ALPHABETS)
बी - 31/19, आर बाबा शॉपिंग
काम्प्लेक्स लंका, वाराणसी।
E-Mail : m@fivealphabets.com
मो0 : 9415147110, 8574479280, 9807505429

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मिथिलेश पटेल एवं संपादक राजू श्रीवास्तव ने रॉयल प्रिंटिंग वर्क्स - C 25/2 राम कटोरा, चेतगंज, वाराणसी से मुद्रित कराकर बी - 31 /19, आर बाबा शॉपिंग काम्प्लेक्स लंका, वाराणसी से प्रकाशित किया।

R.N.I.-UPHIN/2020/78911

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखक के हैं। उसमे संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त विवादों का क्षेत्र वाराणसी न्यायालय होगा।

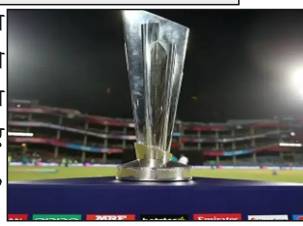

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद के अंतरिम मुख्य कार्यकारी अधिकारी ज्योफ अलार्डिस ने बुधवार को कहा कि उनके पास इस साल अंत में भारत में होने वाले टी20 विश्व कप के लिए 'बैकअप' (दूसरी) योजना है। पढ़े पूरी खबर, **पेज न. 30 पर...**

भारत में होने वाले टी20 विश्व कप पर आईसीसी का बड़ा बयान!

मरीजों के लिए संसाधन जुटाने में तेजी लानी होगी!

कोविड-19 की दूसरी लहर के संघातिक होने के पूवार्नुमान पहले से ही चिकित्सक और वैज्ञानिकों ने लगाए थे। उन्होंने दुनिया को और दुनिया की सरकारों को उन्होंने चेताया भी था किंतु जिन्होंने पहले से तैयारी की वह इसके असर से खुद को बचा सके। जिन्होंने तैयारी नहीं की वे बुरी तरह चपेट में आ गये।

दुनिया के महत्वपूर्ण चिंतकों की राय है कि भारत में प्रति दस हजार की आबादी पर केवल 8.5 बिस्तर ही अस्पतालों में उपल हैं और इसी तरह प्रति दस हजार की आबादी पर मात्र आठ चिकित्सक। इसके बावजूद बेजान हेल्थ केयर डिलीवरी सिस्टम हमें नाक चिढ़ाता है। एक ताजा रिपोर्ट बताती है कि भारत में स्वास्थ्य बीमा 80 प्रतिशत आबादी की पहुंच में नहीं है, 68 प्रतिशत आबादी आवश्यक दवाओं की पहुंच से दूर है।

आज भी स्थिति यह है कि प्रत्येक 25 व्यक्तियों में से केवल एक व्यक्ति को ही हम वैक्सीन लगा सके हैं जबकि ब्रिटेन में हर दो व्यक्ति में से एक और अमेरिका में हर तीन व्यक्ति में से एक वैक्सीनेट हो चुका है। मरीजों की बेतहाशा बढ़ती संख्या के बीच अस्पतालों में आईसीयू बेड, ऑक्सीजन सिलिंडर और रेमडेसिविर दवा की भारी कमी की खबरें कई राज्यों से आ रही हैं।

दिल्ली सरकार ने तो आधिकारिक तौर पर इन सबकी कमी की बात मानी है। कई राज्यों से ऐसी अपुष्ट रिपोर्टें आ रही हैं। इस ढांचागत कमी के बावजूद भी स्वास्थ्य सेवाओं के संबंध में फैसला लेने वाले हमारे जनप्रतिनिधि और सरकारें इसे राजनीतिक और कानून व्यवस्था की समस्या की तरह प्रबंधित कर रहीं हैं जिसका शिकार आम जनता हो रही है जिसे संविधान ने जीवन रक्षा करने का मौलिक अधिकार दिया है।

असफल राजनैतिक प्रशासनिक सिस्टम के साथ-साथ हमें हमारे सामाजिक ढांचे की असफलता पर भी विचार करना होगा। कई जगहों से रेमडेसिविर ब्लैक में कई गुना ज्यादा कीमत पर बेचे जाने की खबरें मिल रही हैं। इन पर रोक लगाने की कोशिशें फलित नहीं हुई हैं। आईसीयू बेड की कमी से निपटने के भी प्रयास हुए हैं, लेकिन वे काफी नहीं। ऐसे संकटपूर्ण हालात में जहां आवश्यक कदमों में असामान्य तेजी लाने की जरूरत होती है, वहीं शांति, समझदारी और संयम बरतने की आवश्यकता भी बढ़ जाती है। सरकार उस मोर्चे पर पूरी कड़ाई बरते।

लॉकडाउन जैसे कदमों से त्रस्त लोगों की तकलीफ समझी जाए, जहां तक हो सके उनकी मदद करने की कोशिश हो। लेकिन सरकार के लिए सबसे बड़ा और कठिन मोर्चा है मरीजों के लिए आवश्यक संसाधन जुटाने का। जिस तरह से वायरस अपना पैटर्न बदल रहा है उसी रफ्तार से हमें रणनीति बदलनी होगी, तब हम सब मिल-जुलकर इस कठिन चुनौती से भी पार पा लेंगे।

-राजू श्रीवास्तव

भारत में ऑक्सीजन की सप्लाई कम क्यों पड़ गई?

भारत में कोरोना के मामले जिस तेज़ी से आ रहे हैं उससे देश का हेल्थकेयर सिस्टम चरमरा गया है। सबसे अमीर शहरों से लेकर दूरदराज़ के इलाक़ों तक का, एक ही हाल है। देश में इन दिनों कई अस्पताल ऑक्सीजन की कमी से जूझ रहे हैं। कई अस्पतालों को अदालत का दरवाज़ा खटखटाना पड़ा है, तो कई अस्पतालों को आख़िरी क्षण में ऑक्सीजन मिल पाई है। पिछले महीने से देश के कई बड़े अस्पतालों से ऑक्सीजन के स्टॉक में कमी की खबरें आ रही थीं। इस सब के बीच, दिल्ली के मुख्यमंत्री ने सार्वजनिक रूप से केंद्र सरकार से राजधानी में मेडिकल ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ाने की अपील की थी। इसके बाद, दिल्ली उच्च न्यायालय ने भी केंद्र सरकार से ऑक्सीजन पुनः भरने की सुविधा को और बढ़ाने के लिए कहा।

एक-एक साँस की लड़ाई -

पश्चिम में महाराष्ट्र और गुजरात से लेकर उत्तर में हरियाणा और मध्य भारत में मध्य प्रदेश तक, हर जगह चिकित्सा ऑक्सीजन की भारी कमी है। उत्तर प्रदेश में तो कुछ अस्पतालों ने बाहर 'ऑक्सीजन आउट ऑफ़ स्टॉक' की तख़्ती लगा दी है। लखनऊ के अस्पतालों ने मरीजों को अन्यत्र जाने के लिए कहना शुरू कर दिया। दिल्ली के छोटे अस्पताल और नर्सिंग होम भी यही कर रहे हैं। कई शहरों में मरीज़ों के बेहाल परिजन ख़ुद सिलिंडर लेकर री-फ़िलिंग सेंटर के बाहर लाइन लगा कर खड़े दिख रहे हैं। हैदराबाद में तो एक ऑक्सीजन प्लांट के बाहर जमा भीड़ पर क़ाबू पाने के लिए बाउंसरों को बुलाना पड़ा। कोरोना के शिकार कई मरीज़ इलाज के इंतज़ार में दम तोड़ रहे हैं। जिन लोगों को साँस लेने में ज़्यादा तकलीफ़ हो रही है उनका इलाज करने में अस्पतालों को दिन-रात एक करना पड़ रहा है। जिन लोगों को क़िस्मत से बेड मिल गई है, उनकी साँसें बचाने के लिए अस्पताल भारी जद्दोजहद में जुटे हैं। सोशल मीडिया और व्हॉट्स ग्रुप पर ऑक्सीजन सिलिंडरों की माँग करती अपीलों की भरमार है।

पिछले एक महीने से भारत अपने भारी दुःस्वप्न से जूझ रहा है। मेडिकल ऑक्सीजन की ज़बरदस्त क़िल्लत ने यहां दहशत पैदा कर दी है। कोरोना से पैदा हालातों को देख चुके डॉक्टरों से लेकर अफ़सरों और पत्रकारों को लग रहा है कि उनकी आंखों के सामने से ऐसे मंज़र पहले भी गुज़र चुके हैं। सात महीने पहले जब कोरोना के मामले उफ़ान पर थे तब भी ऑक्सीजन की ऐसी ही क़िल्लत पैदा हुई थी। लेकिन इस बार हालात पहले से ज्यादा ख़राब हैं। जबकि हक़ीक़त यह है कि देश में ऑक्सीजन का जितना प्रोडक्शन होता है उसका सिर्फ़ 15 फ़ीसदी हिस्सा ही अस्पताल इस्तेमाल करते हैं। बाक़ी 85 फ़ीसदी का इस्तेमाल उद्योगों में होता है। सीनियर हेल्थ अफ़सर राजेश भूषण के मुताबिक़ कोरोना संक्रमण की इस दूसरी लहर के दौरान देश में ऑक्सीजन सप्लाई का 90 फ़ीसद अस्पतालों और दूसरी मेडिकल ज़रूरतों के लिए इस्तेमाल हो रहा है। जबकि पिछले साल सितंबर के मध्य में जब कोरोना की पहली लहर के दौरान संक्रमितों की संख्या सबसे ज़्यादा थी तो हर दिन मेडिकल ज़रूरतों के लिए 2700 टन ऑक्सीजन की सप्लाई हो रही थी।

उस दौरान देश में हर दिन कोरोना संक्रमण के क़रीब 90 हज़ार नए मामले आ रहे थे। लेकिन इस साल अप्रैल में ही 1 महीने पहले तक एक दिन में कोरोना संक्रमण के नए मामले बढ़

सरकार भांप नहीं पाई, हालात इस क़दर बिगड़ेंगे -

पुणे में कोविड अस्पताल चलाने वाले डॉ सिद्धेश्वर शिंदे कहते हैं, "हालात इतने ख़राब हैं, जब तक कि आईसीयू बेड का इंतज़ाम नहीं हो सका तब तक हमें कुछ मरीज़ों का इलाज कार्डियक एंबुलेंस में करना पड़ा। आईसीयू बेड मिलने से पहले हमें उन्हें इन एंबुलेंसों में 12 घंटे तक रखना पड़ा। देश भर में जितने कोरोना संक्रमण के मामले आ रहे हैं, उनमें पुणे दूसरे नंबर पर है। मौतों के मामले में यह तीसरे नंबर पर है।" पिछले सप्ताह जब पुणे में वेंटिलेटर ख़त्म हो गए तो डॉ। शिंदे को अपने मरीज़ों को दूसरे शहरों में भेजना पड़ा। पुणे में ऐसी स्थिति कभी नहीं आई थी। यहां तो आसपास के ज़िलों के लोग इलाज कराने आते हैं। देश में इस वक़्त कोरोना अपना सबसे ज़्यादा क़हर महाराष्ट्र पर ढा रहा है। देश के कोरोना संक्रमित मरीज़ों में एक तिहाई से ज्यादा अकेले इस राज्य में हैं। यहां इस वक़्त हर दिन 1200 टन ऑक्सीजन का प्रोडक्शन हो रहा है लेकिन पूरी ऑक्सीजन कोरोना मरीज़ो में खप जा रही है।

जैसे-जैसे संक्रमण बढ़ता जा रहा है, ऑक्सीजन की माँग भी बढ़ती जा रही है। अब हर दिन 1500 से 1600 टन गैस की खपत की स्थिति आ गई है। इसमें गिरावट के अभी कोई संकेत नहीं दिख रहे हैं। डॉ। शिंदे कहते हैं, "अमूमन हमारे जैसे अस्पतालों को पर्याप्त ऑक्सीजन मिल जाया करती थी। लेकिन पिछले एक पखवाड़े से लोगों की साँस चलाए रखना मुश्किल काम होता जा रहा है। 22 साल की युवा उम्र के लोगों को भी ऑक्सीजन सपोर्ट की ज़रूरत पड़ रही है।"

डॉक्टरों और महामारी विशेषज्ञों का कहना है कि कोरोना के केस इतनी तेज़ी से बढ़े हैं कि टेस्ट और इलाज के लिए काफ़ी इंतज़ार करना पड़ा रहा है। देरी की वजह से लोगों की हालत ख़राब हो रही है और उन्हें इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराना पड़ रहा है। हालत गंभीर होने की वजह से लोग धड़ाधड़ अस्पताल में भर्ती हो रहे हैं। लिहाज़ा हाई-फ्लो ऑक्सीजन की माँग बढ़ गई है। हाई-फ्लो ऑक्सीजन की माँग बढ़ने की वजह से पिछले साल की तुलना में इस बार इसकी ज़्यादा सप्लाई की ज़रूरत पड़ रही है। डॉ। शिंदे कहते हैं, "किसी को पता नहीं कि यह सब कब ख़त्म होगा। मुझे लगता है कि सरकार भी इस हालत का अंदाज़ा नहीं लगा पाई होगी।

ऑक्सीजन के लिए मारामारी के बीच कुछ राज्यों ने स्थिति अच्छी तरह संभाली है। केरल ने पहले तो ऑक्सीजन की सप्लाई बढ़ा दी और फिर इस पर कड़ी निगाह रखनी शुरू की। केस बढ़ने के मद्देनज़र इसने ऑक्सीजन सप्लाई बढ़ाने की योजना पहले से ही तैयार रखी। केरल के पास अब सरप्लस ऑक्सीजन है और अब यह दूसरे राज्यों को इसकी सप्लाई कर रहा है। लेकिन दिल्ली और कुछ दूसरे राज्यों के पास अपने ऑक्सीजन प्लांट नहीं हैं। सप्लाई के लिए वे दूसरे राज्यों पर निर्भर हैं।

इस बीच सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार से एक राष्ट्रीय कोविड योजना बनाने को कहा है ताकि ऑक्सीजन सप्लाई की कमी दूर की जा सके। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने ऑक्सीजन प्लांट लगाने के लिए पिछले साल अक्टूबर में बोलियां आमंत्रित की थीं। हालांकि तब तक भारत में कोरोना संक्रमण के आए हुए आठ महीने से ज्यादा हो चुके थे। स्वास्थ्य मंत्रालय की इस पहल के जवाब में ऑक्सीजन प्लांट लगाने के कई प्रस्ताव आए और 162 को मंज़ूरी दे दी गई। लेकिन मंत्रालय के मुताबिक़ अब तक सिर्फ़ 33 प्लांट ही लग पाए हैं। अप्रैल के आख़िर में 59 प्लांट लगेंगे और मई के आख़िर तक 80। दरअसल ऑक्सीजन सप्लाई के लिए कोई इमरजेंसी प्लानिंग नहीं हुई थी। यही वजह है कि इसके लिए इस क़दर अफ़रातफ़री मची।

भारत में लगभग 500 फ़ैक्ट्रियां हवा से ऑक्सीजन निकालने और इसे शुद्ध करने का काम करती हैं। इसके बाद इसे लिक्विड में बदल कर अस्पतालों को भेजा जाता है। ज़्यादातर गैस की सप्लाई टैंकरों से की जाती है। बड़े अस्पतालों के पास अपने टैंक होते हैं जिनमें ऑक्सीजन भरी जाती है। और फिर वहीं से यह मरीज़ के बिस्तर तक सप्लाई होती है। छोटे और अस्थायी अस्पताल स्टील और एल्यूमीनियम के सिलिंडरों का इस्तेमाल करते हैं। ऑक्सीजन टैंकरों को अक्सर प्लांट के बाहर घंटों क़तार में खड़ा होना पड़ता है क्योंकि एक टैंकर को भरने में लगभग दो घंटे का समय लगता है। इसके बाद अलग-अलग राज्य के शहरों में इन ट्रकों को पहुँचने में भी कई घंटे लग जाते हैं । टैंकरों के लिए गति सीमा भी निर्धारित है। ये 40 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ़्तार से ज़्यादा तेज़ गति से नहीं चल सकते। दुर्घटना के डर से ये टैंकर रात को भी नहीं चलते।

'आग लगने पर कुआं नहीं खोदा जाता' -

देश के सबसे बड़े ऑक्सीजन सप्लायरों में से एक के प्रमुख ने कहा कि असली जद्दोजहद गैस को देश के पूर्वी इलाक़ों से उत्तर और पश्चिम राज्यों में लाने की है। ओडिशा और झारखंड जैसे देश के पूर्वी इलाक़े के औद्योगिक राज्यों में ऑक्सीजन की सप्लाई काफ़ी अच्छी है। दिल्ली और महाराष्ट्र में कोरोना संक्रमण बढ़ते जा रहे हैं और यहां इन राज्यों से जल्द से जल्द ऑक्सीजन की सप्लाई पहुँचना ज़रूरी है। कहां से कितनी ऑक्सीजन की माँग आएगी इसका अंदाज़ा लगाना भी मुश्किल है। अस्पतालों को इसकी कितनी ज़रूरत पड़ेगी यह कहना मुश्किल है। इसलिए जहां ऑक्सीजन की ज़रूरत है वहां इसकी पर्याप्त सप्लाई में बाधा आती है।

मुंबई के एक अस्पताल में संक्रामक रोग विशेषज्ञ के तौर पर काम करने वाले डॉ ओम श्रीवास्तव कहते हैं, "हर मरीज़ को ऑक्सीजन की अलग-अलग मात्रा की ज़रूरत पड़ती है। ज़रूरी नहीं है कि हर मरीज़ को एक निश्चित अवधि तक एक ख़ास मात्रा में ऑक्सीजन दी जाए। अस्पताल में रहने के दौरान हर घंटे उसकी ज़रूरत बदलती जाती है। हम इलाज की जितनी कोशिश कर सकते थे, कर रहे हैं लेकिन मैंने ऐसी स्थिति कभी नहीं देखी थी। मेरे ख्याल से यहां किसी ने ऐसी स्थिति के बारे में नहीं सोचा था।"

ऑक्सीजन के इस हाहाकारी संकट से पहले केंद्र सरकार की इस बात की आलोचना हो रही थी कि इसने कोरोना संक्रमण के बावजूद इसने राजनीतिक रैलियों और कुंभ जैसे तीर्थों और त्योहारों में लोगों के जमावड़े को इजाज़त दे दी। सरकार पर यह भी आरोप लगाए जा रहे थे कि वह टीकाकरण अभियान को पर्याप्त रफ़्तार नहीं दे सकी। आलोचकों का यह भी कहना है कि कई राज्य सरकारों ने देश में तूफ़ानी रफ़्तार से छा गए कोरोना संक्रमण के क़हर से लोगों को बचाने की तैयारी के लिए बहुत कम क़दम उठाए।

अगर सुरक्षा के प्रभावी प्रोटोकॉल अपनाए जाते और सार्वजनिक तौर पर बड़े पैमाने पर मज़बूती से संदेश दिए जाते तो ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को घरों से बाहर निकलने से रोका जा सकता था। इससे संक्रमण को दूर रखने में मदद मिलती। लेकिन जैसे ही जनवरी में कोरोना के केस कम हुए, देश में ढिलाई का माहौल बन गया। लिहाज़ा कोरोना से बचने के उपाय भी धीमे हो गए। इसका ख़मियाज़ा भुगतना पड़ा। कोरोना की दूसरी लहर ने, पहले से भी ज़्यादा भयावह तरीक़े से पलटवार किया।

बहरहाल, मेदी सरकार ने अब 'ऑक्सीजन एक्सप्रेस' शुरू की है। ऑक्सीजन एक्सप्रेस यानी ऑक्सीजन टैंकर लेकर ट्रेनें वहां पहुँच रही हैं, जहां इसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत है। इसके साथ ही भारतीय वायुसेना मिलिट्री स्टेशनों से ऑक्सीजन भी एयरलिफ्ट कर रही है। सरकार 50 हज़ार टन लिक्विड ऑक्सीजन के आयात की भी योजना बना रही है। महाराष्ट्र में एक छोटा ऑक्सीजन प्लांट चलाने वाले राजाभाऊ शिंदे कहते हैं, "हम अधिकारियों से पहले से कहते आ रहे थे कि हम अपनी प्रोडक्शन क्षमता बढ़ाने के लिए तैयार हैं लेकिन हमारे पास इतना फ़ंड नहीं है। हमें वित्तीय मदद की ज़रूरत है। लेकिन उस वक़्त किसी ने कुछ नहीं कहा। लेकिन अब अचानक अस्पताल और डॉक्टर हमसे ज़्यादा से ज़्यादा सिलिंडर माँग रहे हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए था। यहां तो आग लगने पर कुआं खोदा जा रहा है। पानी पीना है तो पहले से कुआं खोदना पड़ता है। लेकिन हमने यह नहीं किया।"

चुनावी रैलियों से क्या भारत में कोरोना संक्रमण बढ़ा है?

एक तरफ़ भारत कोरोना संक्रमण के बेतहाशा बढ़ते मामलों से जूझ रहा है तो दूसरी तरफ़ भारतीय स्वास्थ्य तंत्र ख़ुद को बचाए रखने के लिए संघर्ष कर रहा है। कुछ लोगों का मानना है कि कोविड-19 के मामलों में अचानक रिकॉर्ड तेज़ी के लिए वो राजनीतिक पार्टियाँ ज़िम्मेदार हैं, जिन्होंने ख़तरों के बावजूद विधानसभा चुनावों के मद्देनज़र भीड़भाड़ वाली रैलियाँ करने में कोई झिझक नहीं दिखाई।

हालाँकि सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी का कहना है कि कोरोना के बढ़ते मामलों और राजनीतिक रैलियों के बीच कोई संबंध नहीं है। बीजेपी नेता डॉक्टर विजय चौथाइवाले के अनुसार संक्रमण के बढ़ते मामलों का धार्मिक या राजनीतिक वजहों से जुटी भीड़ से कोई वास्ता नहीं है।

भारत में संक्रमण की स्थिति -

सितंबर 2020 से भारत में कोविड-19 संक्रमण के मामले धीरे-धीरे ही सही मगर कम होने लगे थे लेकिन फिर फ़रवरी 2021 से इनमें तेज़ी आनी शुरू हो गई। मार्च में संक्रमण इतनी तेज़ी से बढ़े कि पिछले साल के सारे रिकॉर्ड टूट गए। मार्च में एक तरफ़ संक्रमण के मामले रिकॉर्ड तेज़ी से बढ़ रहे थे और दूसरी तरफ़ भारत की राजनीतिक पार्टियाँ पश्चिम बंगाल, असम, केरल और तमिलनाडु में होने वाले चुनावों को लेकर बड़ी-बड़ी रैलियाँ कर रही थीं। चुनावी रैलियों का सिलसिला मार्च के शुरुआत से ही जारी था क्योंकि मार्च के आख़िरी हफ़्ते से लेकर पूरे अप्रैल महीने में वोटिंग तय थी।

क्या चुनावी रैलियों की वजह से बढ़े मामले?

चुनावी रैलियों में बड़ी संख्या में भीड़ उमड़ी और लोगों के बीच फ़िज़िकल डिस्टेंसिंग नाम की कोई चीज़ शायद बची नहीं। रैलियों में मास्क पहने लोग भी बहुत कम ही नज़र आए। आम लोग तो दूर, रैलियाँ कर रहे नेता और उम्मीदवार भी कोविड से जुड़े प्रोटोकॉल का पालन करते नज़र नहीं आ रहे थे। भारतीय निर्वाचन आयोग पश्चिम बंगाल में चुनावी रैलियों के दौरान कोविड प्रोटोकॉल का पालन न होने के लेकर चेतावनी जारी की। चेतावनी के बावजूद नेताओं को सुरक्षा मानकों का पालन न करते देख आख़िरकार निर्वाचन आयोग ने 22 अप्रैल से चुनावी रैलियों पर रोक लगा दी। पश्चिम बंगाल में मार्च के दूसरे हफ़्ते से लेकर अब तक कोरोना संक्रमण के रोज़ाना मामलों में तेज़ी से बढ़त दर्ज की गई। अन्य चुनावी राज्यों जैसे असम, केरल, उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु में भी मार्च के आख़िरी सप्ताह और पुरे अप्रैल में संक्रमण के मामलों में ऐसी ही तेज़ी देखी गई।

हालाँकि ऐसा नहीं है कि इस समयावधि में सिर्फ़ चुनावी राज्यों में ही संक्रमण के मामले बढ़े। इस दौरान पूरे भारत में संक्रमण मामलों में तेज़ी दर्ज की गई। उदाहरण के लिए, महाराष्ट्र और कर्नाटक जैसे कई राज्यों में संक्रमण के मामलों में रिकॉर्ड तेज़ी देखी गई जबकि वहाँ चुनाव या चुनावी रैली जैसी कोई बात नहीं थी। इसलिए कोरोना के बढ़ते मामलों और चुनावी रैलियों के बीच कोई सीधा संबंध दिखाने के लिए ठोस प्रमाण या डेटा मौजूद नहीं है।

संक्रमण के पीछे वायरस का नया वैरिएंट है?

वैज्ञानिक इस बात का पता लगाने में जुटे हैं क्या कि भारत में संक्रमण की दूसरी लहर के पीछे कोरोना वायरस के नए वैरिएंट का हाथ है। विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसा हो सकता है लेकिन इसे साबित करने के लिए अभी पर्याप्त साक्ष्य नहीं हैं। डेटा की कमी के कारण कोरोना वायरस के भारतीय वैरिएंट को पब्लिक हेल्थ ऑफ़ इंग्लैंड ने अभी 'वैरिएंट ऑफ़ कंसर्न' घोषित नहीं किया है जबकि ब्रिटेन, ब्राज़ील और दक्षिण अफ़्रीकी वैरिएंट को वैरिएंट ऑफ़ कंसर्न माना जा चुका है।

यहाँ ध्यान देने वाली बात यह भी है कि भारत में मार्च-अप्रैल में कुम्भ मेले जैसा विशाल धार्मिक आयोजन भी हुआ। कोरोना के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए निरंजनी अखाड़े ने कुम्भ का 17 अप्रैल को समापन करने का ऐलान किया। बता दें कि हरिद्वार में चल रहे महाकुंभ में मौजूद लगभग 2 लाख से अधिक लोगों का कोरोना टेस्ट कराया गया, जिसमें 1701 लोगों की रिपोर्ट पॉजिटिव आयी है। जानकारी के अनुसार कुंभ में शामिल कई लोगों की अभी रिपोर्ट आनी बाकी है जिसमें कोरोना पॉजिटिव लोगों के आंकड़े बढ़ने के आसार हैं।

ऑक्सीजन की कमी के लिए केंद्र को पहले ही किया गया था आगाह!

देश में कोरोना मरीज इलाज के इंतजार में दम तोड़ रहे है। इसको लेकर अस्पतालों में भी अफरा-तफरी का माहौल बना हुआ है। जिन मरीजों को सांस लेने में ज्यादा तकलीफ हो रही है उनके इलाज में अस्पतालों को भी दिन रात एक करना पड़ रहा है। ऐसे में सोशल मीडिया पर ऑक्सीजन सिलेंडर की मांग करती अपीलों की भरमार लगी हुई है, जो काफी दयनीय दिखाई दे रही है।

कुछ तस्वीरें तो ऐसी भी है जो आपको रुला देने को मजबूर कर देंगी। इसी बीच एक ऐसी खबर आई है जिसमें ये दावा किया गया है कि केंद्र सरकार को ऑक्सीजन की इस कमी के लिए पहले ही आगाह किया गया था। जानकारी के मुताबिक संसद की एक स्थाई समिति ने कोरोनावायरस की दूसरी लहर आने के कुछ महीने पहले ही सरकार को सुझाव दिया था कि अस्पतालों में बेडों की संख्या और ऑक्सीजन का उत्पादन बढ़ाया जाए।

स्वास्थ्य संबंधी इस स्थाई समिति ने पिछले साल नवंबर में ही अपनी रिपोर्ट में यह पैरवी की थी कि राष्ट्रीय औषधि मूल्य प्राधिकरण को ऑक्सीजन सिलेंडर की कीमत तय करनी चाहिए ताकि किफायती दर पर इसकी उपलता सुनिश्चित हो सके। बता दें कि इस समिति के अध्यक्ष समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता रामगोपाल यादव है और समिति में भाजपा के 16 सदस्य शामिल है।

जानकारी के मुताबिक समिति ने साफ तौर पर कहा था कि समिति सरकार से यह अनुशंसा करती है कि ऑक्सीजन के उत्पादन को बढ़ाया जाए और उन्हें प्रोत्साहित किया जाए ताकि अस्पतालों में ऑक्सीजन की कमी ना हो और इसकी आपूर्ति सुनिश्चित हो सके। साथ ही समिति ने यह भी कहा था कि कोरोना मरीजों की संख्या को देखते हुए अस्पतालों में बेडों की संख्या पर्याप्त नहीं है इसलिए अस्पतालों में बेडों और वेंटिलेटर की पर्याप्त व्यवस्था की जाए ताकि महामारी पर लगाम लगाई जा सके। इसके साथ ही समिति ने स्वास्थ्य व्यवस्था की खराब हालत के मद्देनजर यह सुझाव दिया था कि स्वास्थ्य क्षेत्र में निवेश को बढ़ा दिया जाए।

भारतीय न्यायपालिका और महिलाएं - लिंगभेद की एक और कहानी!

'महिलाएं' एक ऐसा शब्द है, जिसका पर्याय अब असमानता बन चुका है। जहां महिला है वहां असमानता है, चाहे वह घर हो, या काम की जगह, असमानता महिलाओं का पीछा हर जगह कर ही लेती है। असमानता की एक ऐसी ही कहानी भारत का उच्चतम न्यायालय भी कहता है।

भारत में आए दिन महिलाओं के खिलाफ शोषण, रेप, हत्या दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है। ऐसे में हमारा कानून भी महिलाओं की सुरक्षा के लिए कुछ नहीं कर पाता और करेगा भी कैसे? एक ऐसा न्यायालय जहां कभी कोई महिला आजादी के लगभग 70 सालों बाद भी भारत की मुख्य न्यायाधीश नहीं बनी और जहां के न्यायपालिका में महिलाओं का नाम मात्र का योगदान हो, ऐसी न्यायपालिका क्या महिलाओं का दर्द कभी समझ पाएगी, ये बता पाना मुश्किल है।

भारतीय सुप्रीम कोर्ट उर्फ भारत का उच्चतम न्यायालय:

भारत का उच्चतम न्यायालय सुप्रीम कोर्ट ने अपनी स्थापना से लेकर अब तक देश के जनतंत्र, आम जनता की सुरक्षा, जैसे मुद्दों पर उल्लेखनीय निर्णय दिये हैं। इतना ही नहीं सुप्रीम कोर्ट ने यौन अभिविन्यास, व्यभिचार, सबरीमाला मंदिर में महिलाओं के प्रवेश को लेकर खास तौर पर कुछ बहुत ही चुनौतीपूर्ण फैसले सुनाए हैं। लेकिन भारत के न्यायपालिका को यदि महिलाओं की सशक्तिकरण के मामले में मापा जाए तो शायद वह काफी पीछे हैं। आजादी से लेकर अब तक भारत में महिलाएं प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, राज्यपाल जैसे स्थानों पर बैठ चुकी हैं। लेकिन 130 करोड़ वाले आबादी में आज तक कभी भी एक महिला कभी सुप्रीम कोर्ट की मुख्य न्यायाधीश नहीं बनी।

सुप्रीम कोर्ट की स्थापना अक्टूबर 1935 को हुई थी, भारत की संविधान के मुताबिक सुप्रीम कोर्ट ने जनवरी 1950 से काम करना शुरू किया। शुरुआत में सुप्रीम कोर्ट में केवल 8 जज हुआ करते थे लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया वैसे वैसे जज की संख्या भी बढ़ती गई और एक महिला को जज बनने के लिए 40 साल लग गए। भारत की पहली महिला जज फातिमा बीवी थी। आज सुप्रीम कोर्ट में तीन महिला जज हैं लेकिन मुख्य न्यायाधीश का पद तो 2025 तक पुरुष जज के लिए तय किया जा चुका है।

भारतीय न्यायपालिका में महिलाओं की चुनौतियां:

"मैं एक समुदाय की प्रगति को, उस समुदाय में महिलाओं की प्रगति से मापता हूं" - भीमराव अंबेडकर की एक लाइन याद आती है, शायद भारतीय न्यायपालिका को भी कुछ ऐसे ही प्रगति की जरूरत है। महिलाओं के लिए चुनौतियां तो हर जगह है लेकिन न्यायपालिका में शायद कुछ ज्यादा ही। सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता लिस्ट के मुताबिक 400 पुरुषों के मुकाबले केवल 16 महिलाएं ही इस सूचि में शामिल हैं, मतलब कुल का मात्र 4 प्रतिशत।

दिसंबर 2013 में लंदन के ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से लॉ की पढ़ाई करके भारत आई अवनी बंसल ने हरदा के मध्यप्रदेश में जिला अदालत में कानून का अभ्यास शुरू किया। वह वहां क्रिमिनल लॉ अभ्यास कर रही थी। उनका कहना है कि वहां सैकड़ों में से सिर्फ 3 महिलाएं थी, और अवनी बंसल उन तीन में से एक। वह अपने अनुभव से बताती हैं कि, वहां के पुरुष वकील उनसे कभी तमीज से बात नहीं करते थे, और ज्यादा होशियार मत बनो कहकर चुप करा देते थें। यहां तक की जज भी उन वकीलों को कुछ नहीं कहते थें।

अवनी बंसल का अनुभव हमें भारत की न्यायपालिका में महिलाओं के साथ हो रहे कड़वी सच्चाई को बताता है। यहां पर सवाल गलत या सही का नहीं बल्कि सवाल स्वीकार करने को लेकर है और कानून मंत्रालय को शायद जल्द ही इस सवाल का जवाब देना होगा।

असमानता के आंकड़े:

न्यायपालिका के आंकड़े देखे जाए तो असमानता के मामले काफी चौका देने वाले हैं। भारत के हाईकोर्ट में बैठे हुए जज की संख्या 656 है, जिसमें से केवल 73 महिलाएं हैं यानि कि महिलाओं का योगदान केवल 11.12 % का है। इसमें चौकाने वाली बात यह है कि भारत के 25 हाईकोर्ट्स में से 5 में एक भी महिला जज नहीं है। सुप्रीम कोर्ट में पहले रहे 169 जजों में से केवल 6 महिलाएं थी, और हैरानी की बात यह है कि भारत के 13 हाईकोर्ट में तो आज तक कोई महिला मुख्य न्यायाधीश बनी ही नहीं। मौजूदा वक़्त में केवल जम्मू कश्मीर हाई-कोर्ट की न्यायाधीश एक महिला है। भारत में सबसे अधिक महिला जज केरल हाई कोर्ट में बैठे हैं। यह आंकड़े केवल जज तक ही सीमित नहीं, बल्कि वकील और सीनियर एडवोकेट के आंकड़े भी कुछ ऐसे ही हैं।

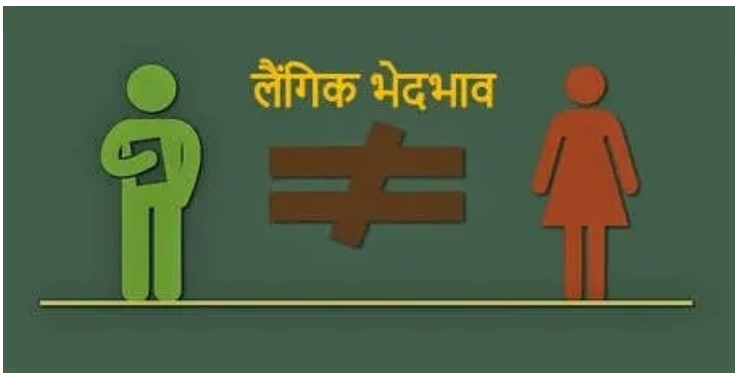

क्यों जरूरी है महिलाओं का न्यायपालिका में योगदान?

महिलाओं का न्यायपालिका में होना देश की प्रगति के लिए, सही फैसलों के लिए, अत्यंत आवश्यक है। कोई फैसला लेने से पहले जब जजस का बेंच बैठता है, और यदि हम मान ले कि वह फैसला महिलाओं से जुड़ा हो, और यदि उस बेंच में महिला ही ना हो, तो फिर कहीं ना कहीं लिंग पर पक्षपात हो ही जाता है। इस पक्षपात की भावना को, और कानून को सही तरीके से चलने के लिए एक महिला की नजरिया को फैसलों में लाना जरूरी है। इससे विविधता देखने को मिलता है, और अलग अलग नजरिया भी जो कहीं ना कहीं कानून के सही तरीके से चलने में एक स्तंभ का काम करता है। इसलिए न्यायपालिका में समानता जरूरी है। जिससे कानून को ही नहीं देश की पूरी जनता को फायदा है।

तो आखिर कमी कहां है?

न्यायपालिका में महिला सशक्तिकरण को लेकर शायद किसी को भी गलत ठहराना गलत है। जज की नियुक्ति तो उनके योग्यता को देखकर होती है। एक वकील भी अपनी योग्यता के आधार पर ही आगे बढ़ता है। भारतीय न्यायपालिका में शायद महिलाओं को छूट के साथ साथ, सरकार द्वारा प्रोत्साहन की भी जरूरत है। इस भेदभाव को कम करने के लिए कानून को सरकार के साथ और सरकार को जनता के साथ काम करना होगा।

आने वाले दिनों में अभी के आंकड़ों के मुताबिक हालत अच्छे होंगे ऐसा कहा जा सकता है, क्योंकि अब हर लॉ स्कूल में महिलाएं भी तेजी से एडमिशन ले रही है। और आज के तौर पर महिलाएं भी पीछे नहीं है, वे भी पुरुषों का हर जगह मुकाबला कर रहे हैं। आजकल के आंकड़े देखे जाएं तो महिलाएं तेजी से कानून की दुनिया में बड़े हैं। तो शायद आने वाले भविष्य में हमें ढ़ेरों महिला जज, महिला वकील, और महिला एडवोकेट देखने को अवश्य मिलेगा। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि महिला सशक्तिकरण के बिना देश का विकास संभव नहीं। समानता के लिए सबसे ज्यादा आवश्यक है रूडीवादी धारणा को खत्म करना।

महिला शोषण को लेकर सख्त कानून:

न्यायपालिका में महिला सशक्तिकरण लाने का सबसे महत्वपूर्ण समय अब है, देश में महिलाओं को लेकर अन्याय बढ़ता जा रहा है , और यदि इन सभी के खिलाफ हमें कानून से लड़ना है तो फिर उस कानून में महिला की हिस्सेदारी भी होना आवश्यक है। यदि महिलाएं नहीं होंगी तो फिर उनके हक को समझेगा कौन बताया जाता है कि कई सारे शोध के बाद या पता चला कि यदि कोई भी फैसला लेने में एक भी महिला हो तो उस फैसले को देखने का एक नजरिया अलग जरूर मिलता है जो कि उस फैसले की निव मजबूत करती है। भारत में भी यदि हमें महिला शोषण रोकना है तो पहले महिला सशक्तिकरण लाना है।

कानून की लड़ाई लंबी होती है, क्योंकि शायद सच्चाई का रास्ता ही हमेशा से मुश्किल रहा है, शायद इसलिए भगवान राम 14 वर्ष वनवास में थे, और पांडवों को सच्चाई की जीत के लिए महाभारत का युद्ध करना पड़ा। न्यायपालिका में महिला सशक्तिकरण भी एक ऐसी लड़ाई है, भले ही यहां कोई गलत या सही नहीं लेकिन कमी जागरूकता की है जो कि शायद अब दिखना शुरू हुआ है। लेकिन और जागरूकता की हमें आवश्यकता है, एक देश में महिला सुरक्षा के लिए महिलाओं का होना हमारा आवश्यकता है, एक देश की प्रगति के लिए महिलाओं का आगे बढ़ना आवश्यकता है, इसलिए अब वक्त आ गया है कि शायद न्यायपालिका में भी लोग महिलाओं को अलग नजरिए से देखें उन्हें भी बराबर समझा जाए और न्यायपालिका में कहीं भी असमानता ना दिखना ही एक मजबूत और निडर कानून का पहचान होगा।

कोरोना संक्रमण को गांवों तक पहुंचने से रोकना होगा,
यदि कोरोना वायरस ने पैर पसारे तो मुश्किल होगा हालात संभालना!

प्रियांशी श्रीवास्तव

राष्ट्रीय पंचायत राज दिवस के मौके पर प्रधानमंत्री ने यह कहकर समय रहते लोगों को आगाह किया कि कोरोना संक्रमण को गांवों तक पहुंचने से रोकना होगा। उनकी इस अपील पर न केवल ग्रामीण जनता, बल्कि संबंधित प्रशासन के लोगों को भी गंभीरता से ध्यान देना चाहिए।

यह सही है कि पिछले साल कोरोना संक्रमण की लहर को गांवों तक पहुंचने से रोक दिया गया था, लेकिन इस बार इसका खतरा इसलिए अधिक बढ़ गया है, क्योंकि एक तो संक्रमण की दूसरी लहर बहुत तेज है और दूसरे, बड़े शहरों से तमाम कामगार अपने गांव लौट चुके हैं या फिर लौट रहे हैं। चूंकि इनके जरिये ग्रामीण आबादी के बीच कोरोना आसानी से फैल सकता है, इसलिए उन्हें गांवों से बाहर स्कूलों, पंचायत भवनों आदि में क्वारंटाइन करने और उनके स्वास्थ्य की निगरानी करने का काम तत्काल प्रभाव से होना चाहिए।

ये दोनों काम प्राथमिकता के आधार पर सही तरह से हों, इसकी चिंता खुद गांव वालों को भी करनी होगी। कई गांवों ने इस मामले में अनुकरणीय उदाहरण पेश किया है, लेकिन यह भी सही है कि देश के कुछ ग्रामीण इलाकों में कोरोना संक्रमण सिर उठाता दिख रहा है। यह शुभ संकेत नहीं। हालांकि ग्रामीण इलाकों में आबादी का घनत्व कम है और वहां का रहन-सहन भी शहरों से अलग है, लेकिन यदि गांवों में कोरोना ने अपने पैर पसारे तो हालात संभालने मुश्किल होंगे।

इस तथ्य से हर किसी को परिचित होना चाहिए कि गांवों के समीप कस्बों और छोटे शहरों में स्वास्थ्य सेवाएं बेहतर स्थिति में नहीं हैं और बड़े शहरों के अस्पताल पहले से ही गहन दबाव में हैं। उचित यह होगा कि ग्रामीण क्षेत्रों में कोरोना संक्रमण से बचे रहने के उपायों का पालन कराने वाले सक्रिय हों। इसके लिए राज्य सरकारों और उनके प्रशासन को भी सजगता दिखानी होगी। वास्तव में सक्रियता और सजगता न केवल संक्रमण से बचे रहने के लिए दिखानी होगी, बल्कि इसके लिए भी कि सभी पात्र लोग जल्द से जल्द टीका लगवाएं।

टीकाकरण के मौजूदा चरण और एक मई से शुरू होने वाले अगले चरण में ग्रामीण जनता की बढ़-चढ़कर हिस्सेदारी उतनी ही जरूरी है, जितनी शहरी जनता की। टीकाकरण अभियान को गति देने और उसकी पहुंच को प्रभावी बनाने के लिए टीके की महत्ता से परिचित कराने का काम भी जोर-शोर से शुरू कर दिया जाना चाहिए। इसमें योगदान देने के लिए ग्रामीण क्षेत्र की जनता का प्रतिनिधित्व करने वालों को आगे आना चाहिए। यह इसलिए जरूरी है, क्योंकि टीके को लेकर अभी भी हिचक दिख रही है। इस हिचक को तोड़ने के लिए हर संभव कोशिश न केवल होनी चाहिए, बल्कि होते हुए दिखनी भी चाहिए।

भारत पर भड़के डोनाल्ड ट्रम्प की नाराजगी को आज समझा जा सकता है!

विकास श्रीवास्तव

ऑक्सीजन का अभाव न केवल दुखद, बल्कि पूरे देश के लिए एक अवसर भी है। यह सबक है कि हम अपनी स्वास्थ्य व्यवस्था को इस तरह दुरुस्त करने में लग जाएं कि फिर कभी ऐसी महामारी आए भी, तो हमें परेशान न करे। अकेले दिल्ली के गंगाराम अस्पताल में अगर 24 घंटे में 25 मरीजों की मौत हुई है, तो देश के दूसरे अस्पतालों में क्या हो रहा होगा, इसका अंदाजा हम सहज ही लगा सकते हैं। यदि बहुत बीमार मरीजों की मौत हुई है, तो भी यह हमारे लिए बड़े दुख की बात है, लेकिन अगर ये मौतें ऑक्सीजन से जुड़ी किसी कमी के कारण हुई हैं, तो हमारी व्यवस्था के लिए शर्मनाक है।

निजी अस्पतालों को सुविधाओं और संसाधनों के लिए जाना जाता है, ऐसे ही अस्पतालों में गंगाराम अस्पताल भी शामिल है। ऐसे अस्पतालों से यह भी उम्मीद की जाती है कि वे सार्वजनिक अस्पतालों के सामने एक आदर्श पेश करेंगे। सार्वजनिक अस्पतालों पर जो दबाव बना हुआ है, वह कोई नया नहीं है, लेकिन जब निजी अस्पताल भी हांफने लगे हैं, तब यह पूरे देश के लिए चिंता की बात है। विगत दशकों में जिस तरह से निजी अस्पतालों को फलने-फूलने दिया गया है और जिस तरह से निजी अस्पतालों का आकार-प्रकार व संख्या बढ़ी है, उसी हिसाब से उनसे उम्मीदें भी हैं।

दिल्ली में ऑक्सीजन की कमी से आपात स्थिति है, तो प्रधानमंत्री के साथ बैठक में भी इस पर तकरार आश्चर्य की बात नहीं है। नेताओं के बीच तकरार बढ़ना तय है, क्योंकि दोषारोपण की प्रवृत्ति पुरानी है, लेकिन अब जब नेताओं के बीच संघर्ष हो, तो आम लोगों को सचेत रहना चाहिए और याद रखना चाहिए कि जब जरूरत थी, तब राजनीतिक दल कैसा व्यवहार कर रहे थे? यह समय पार्टियों के झंडे लहराने का नहीं है, अब बात देश के झंडे पर आ गई है। भारत कोरोना ही नहीं, अभावों का भी एक बड़ा केंद्र नजर आ रहा है। अभी महीने भर पहले ही हम दवाओं और टीके का अंतरराष्ट्रीय वितरण कर वाहवाही बटोर रहे थे। अब समय आ गया है कि हम अपनी मांग पहले पूरी करें। दुनिया इस बात को समझती है कि भारत एक बड़ी आबादी वाला देश है और यहां चिकित्सा व्यवस्था को चाक-चौबंद रखना उतना आसान नहीं है। हमने देखा है, जब अमेरिका या यूरोपीय देशों में कोरोना की लहर चरम पर थी, तब वहां भी चिकित्सा सेवाओं का ऐसा ही हाल था। पर उन देशों ने युद्ध स्तर पर इंतजाम किए। एक दवा कम पड़ी थी, तो डोनाल्ड ट्रंप भारत पर लगभग भड़क उठे थे। आज ट्रंप की उस नाराजगी को समझा जा सकता है। सोचिए, राष्ट्रीय राजधानी जब ऑक्सीजन मांग रही है, तब देश के बाकी इलाकों में क्या स्थिति होगी? राज्य सरकारों को भी स्वास्थ्य क्षेत्र में अपनी भूमिका को अच्छे से समझने की जरूरत है। राज्यों में विशेष रूप से बुनियादी सुविधाओं के लिए केंद्र सरकार से जरूरी संसाधन व धन मांगने की प्रवृत्ति होनी चाहिए।

कोरोना हमें रुला-रुलाकर जो सिखा रहा है, वह हमें भूलना नहीं चाहिए। विफलता को मानने और गलतियां सुधारने की योग्यता-क्षमता होनी चाहिए। ऐसे मुश्किल समय में किसे राजनीति सूझ रही है, जरूर दर्ज होना चाहिए। गंगाराम या नासिक के हादसे तो चंद उदाहरण हैं कि सरकारें संभाल नहीं पा रही हैं। यह लोगों के दुख-दर्द पर मरहम लगाने का वक्त है, जो सरकारें इस काम को अंजाम देंगी, देश उन्हें हमेशा याद रखेगा।

हर 100 साल में होती है कोरोना जैसी महामारी, आंकड़ें देख आप भी कहेंगे- ये प्रकृति का अपना तरीका है!

कोरोना वायरस ने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया है। पहले इस वायरस की चपेट में चीन आया, जिसके बाद इस वायरस ने इटली को अपनी चपेट में लिया और अब अमेरिका और भारत समेत कई देश इसकी चपेट में आ गए हैं। सरकारें इस वायरस से अपने नागरिकों की जान बचाने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा रही हैं। इस महामारी से बचने का केवल एक ही तरीका है- लोगों से दूरी। लेकिन आपको संभवतः यह पता नहीं होगा कि दुनिया में कोरोना जैसी महामारी पहली बार नहीं आई है। इस प्रकृति का अपना तरीका कहें या फिर कुछ और... लेकिन दुनिया को हर 100 साल में कोरोना जैसी महामारी का सामना करना पड़ा है। ये सिलसिला पिछले 400 सालों से चलता आ रहा है। आइए जानतें हैं 400 सालों से लोगों को किन-किन महामारियों का सामना करना पड़ा है।

धीरे-धीरे ये बीमारी बाकी देशों में भी फैली। इसने माल्टा में 1679, विएना में 76,000 प्राग में 83 हजार लोगों की जान ली। यह महामारी इतनी भीषण थी कि इससे 10,000 की आबादी वाले ड्रेस्डेन नगर में 4,397 नागरिक इसके शिकार हो गए।

बताते चले कि प्लेग ने भारत पर भी आक्रमण किया। इस बीमारी से संपूर्ण भारत में दहशत क माहौल पैदा हो गया। यह महामारी पाली से मेवाड़ पहुंची, फिर मेवाड़ में इस महामारी ने इतना तांडव मचाया कि लोग डरने लगे। ये चूहों से फैली महामारी थी। इस महामारी से हालात यह थे कि अस्पताल पहुंचने से पहले भी लोगों की मौत हो जाया करती थी।

एक सरकारी रिपोर्ट के मुताबिक, इस महामारी से 1800 करोड़ का नुकसान हुआ। प्लेग एक ऐसा संक्रमण था जो जानवरों से इंसानों में पहुंचता है। इस महामारी से बचने के लिए गुजरात के सूरत में हजारों लोगों ने पलायन किया था। पलायन की शुरुआत गुजरात के सूरत से शुरू हुई थी। यहां रहने वाले लोग जब प्लेग की चपेट में आकर मरने लगे तो यूपी और बिहार से आकर यहां बसने वाले लोग भी अपने घरों को पलायन करने लगे। इस महामारी से देखते ही देखते सूरत से 25 फीसदी आबादी बाहर चली गई। उस दौर में भी लोगों को आइसोलेश की हिदायत दी गई थी।

प्लेग-

फ्रांस के एक छोटे से शहर मॉर्साइल में 1720 में फैली प्लेग महामारी ने 1 लाख से ज्यादा लोगों की जान ले ली। प्लेग फैलते ही कुछ महीनों में 50 हजार लोगों की मौत हो गई। बाकी 50 हजार लोग अगले दो सालों में मारे गए। बता दें कि उस समय लोगों को इस बीमारी का पता ना होने के कारण यह कई शहरों और प्रांतों में फैलती गई और लोगों को अपनी चपेट में लेती गई।

कॉलेरा-

प्लेग महामारी के 100 साल बाद 1820 में एशियाई देशों में कॉलेरा मे महामारी का रूप लिया। इस महामारी ने जापान, भारत, बैंकॉक, मनीला, ओमान, चीन, सीरिया आदि देशों तो अपनी चपेट में ले लिया। बता दें कि कॉलेरा की वजह से सिर्फ जावा में 1 लाख लोगों की जान चली गई। इस महामारी से सबसे ज्यादा मौतें थाईलैंड, इंडोनेशिया और फिलीपींस में हुई थी।

स्पैनिश फ्लू-

कॉलेरा महामारी के 100 साल बाद 1920 में स्पैनिश फ्लू ने अपने पैर पसारे। बताया जाता है कि इस महामारी की वजह से पूरी दुनिया में 1।70 करोड़ से 5 करोड़ लोगों की जान चली गई थी। माना जाता है कि यह वायरस अमेरिका से फैला था। उस समय विश्व युद्ध का समय था और यह फ्लू अमेरिकी सैनिकों से यूरोप में फैला था। भारत में स्पैनिश फ्लू को बॉम्बे फीवर के नाम से जाना गया। एक अनुमान के मुताबिक भारत में इस महामारी से लगभग एक से दो करोड़ लोगों की जान चली गई थी। उस समय इस महामारी की कोई वैक्सीन ना होने के चलते सरकार ने लोगों को आइसोलेट करके वायरस को काबू में पाया था।

कोरोना वायरस-

वहीं, एक बार फिर 100 साल पुराना इतिहास दोहराया गया है और 2020 में कोरोना वायरस महामारी सामने आई है। अब तक दुनियाभर के 188 देशों में कोरोना वायरस से संक्रमण (कोविड-19) के कम से कम 14 करोड़ मामले दर्ज किए गए हैं और अब तक 30 लाख लोगों की मौत हो चुकी है। दुनियाभर में कई वैक्सीन बन चुके हैं, करोड़ों लोगों को वैक्सीन भी लग चुकी है लेकिन अभी भी स्थिति काबू में नही दिख रही है। भारत में भी अब तक कम से कम 1 करोड़ 70 लाख से ज्यादा मामले दर्ज किए गए हैं और अब तक लगभग 2 लाख लोगों की मौत हो चुकी है।

नोट - कोरोना वायरस से जुड़े सभी आकड़े 27 अप्रैल तक के हैं।

लॉकडाउन में ई-कौमर्स का बढ़ता दबदबा!

धीरेन्द्र प्रताप

देश की खुशहाली जैसी भी है, उस का एक बड़ा कारण खुदरा व्यापार है। खुदरा व्यापारी थोक विक्रेताओं और उत्पादकों से सामान खरीदते हैं और लोग उन की दुकानों पर आ कर उन से वह सामान खरीदते हैं। लेकिन अब उन की जगह ईकौमर्स वाली विशाल कंपनियां लेने लगी हैं। ज्यादातर ईकौमर्स बिक्री एमेजौन और फ्लिपकार्ट के माध्यम से ही होती है, हालांकि, अब छोटे उत्पादक भी सीधे प्रचार कर के अपना सामान बेचने की कोशिश कर रहे हैं।

एक खुदरा व्यापारी के पास एक तरह की 100-200 चीजें होती हैं। आम खरीदार को दालों, मसालों के लिए कहीं, कपड़ों के लिए कहीं, क्रौकरी के लिए कहीं, फलसब्जियों के लिए कहीं और जाना पड़ता है। जबकि, एमेजौन और फ्लिपकार्ट सबकुछ, सिवा कारों व वाहनों के, एक ही प्लेटफौर्म पर देने लगी हैं। ईकौमर्स कंपनियों की उपभोक्ता के लिए यह सुविधा उन लाखों दुकानदारों को बेकार कर रही है जो देश के समाज व अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी थे। ये मिडिलमैन ही थे जो उत्पादक से नया सामान खरीदने के साथ कुछ मुनाफा कमा कर बेचा करते थे। ये मध्यवर्ग की पहचान थे। लेकिन अब ये जीरो बन कर रह गए हैं। इन्हें सम झ नहीं आ रहा कि नई चुनौतियों का सामना कैसे करें।

लोकल सर्कल नाम की सर्वे कंपनी ने पता किया है कि कोविड के चलते थोपे गए लौकडाउन के दौरान उपभोक्ताओं को जो आदत पड़ी, वह आज भी जारी है। 49 फीसदी उपभोक्ता छोटा सामान अब इन ईकौमर्स कंपनियों से खरीदने लगे हैं क्योंकि खरीदारों में से 86 फीसदी को ये सुरक्षित लगती हैं, 50 फीसदी सोचते हैं कि दाम कम हैं, 48 फीसदी को इन की वापस करने की सुविधा भाती है, 40 फीसदी कहते हैं कि उन्हें सामान चुनने में सुविधा रहती है, 45 फीसदी कहते हैं कि बाजार जाए बिना खरीदारी हो जाती है और 45 फीसदी को उक्त सामान के बारे में दूसरों के अनुभव पढ़ने को मिल जाते हैं, साथ ही सामान में किसी तरह की कमी होने पर शिकायत करने का अवसर भी मिलता है और इन कंपनियों द्वारा शिकायत का निदान भी जल्द ही किया जाता है।

सदर बाजार या लोकल गलीमहल्ले का वितरक यह सब नहीं कर पा रहा। वह अब केवल सस्ता, डुप्लीकेट माल अनपढ़ों या अधपढ़ों को बेच पा रहा है। गलीमहल्ले से ले कर बड़े-बड़े बाजारों की बड़ी दुकानों के दुकानदार, आमतौर पर सूदखोरी ज्यादा करते हैं और ग्राहक की शक्ल देख कर दाम लेते हैं। उन की डिस्काउंट पौलिसियां उन की मनमरजी की होती हैं। वे विज्ञापन में तो भरोसा ही नहीं करते।

ये बड़ी कंपनियां अगर खुदरा बाजार को समाप्त कर देंगी तो देश का मध्यवर्ग केवल नौकरीपेशा बन कर रह जाएगा। अपना, छोटा ही सही, खुद का व्यापार मध्यवर्ग की पहचान था। पीढियों से खुदरा व्यापार के बल पर करोड़ों परिवार खातेपीते माने गए हैं। अब उन्हें अपने बच्चों को शिक्षा दिला कर नौकरी के लिए भेजना पड़ रहा है वह भी देश से बाहर क्योंकि देश में नौकरियां हैं ही नहीं।

छोटे खुदरा व्यापारी अपना न ब्रैंड बना रहे हैं और न ही ग्राहकसेवा का काम सीख रहे हैं। दुकान के कोने में मूर्ति के आगे दीया जला कर वे सोचते हैं कि लक्ष्मी खुश हो जाएंगी। लक्ष्मी तो अमेरिका की एमेजौन व वालमार्ट कंपनियों के पास जा रही है। ईकौमर्स कंपनियां ग्राहकों को उधार नहीं देतीं पर फिर भी उत्पादकों को महीनों बाद भुगतान करती हैं। हैरानी यह है कि उत्पादकों की हिम्मत नहीं कि वे चूं भी कर सकें। यह सामाजिक परिवर्तन है जिस की जिम्मेदार, बहुत हद तक, केंद्र सरकार है जो इन खुदरा व्यापारियों के बल पर सत्ता में आई है।

धर्म और आस्था के नाम पर बड़ी लापरवाही, सरकार की चुप्पी बड़ा सवाल!

रवि पटेल

धर्म का नशा इतना बड़ा है कि लोग अपनी जान की परवाह किए बिना हरिद्वार में हो रहे कुंभ में बिना कोविड जांच कराए पहुंचें। लोगों ने खुद को भी बिमारी का निमंत्रण दिया और अगर उन्हें है तो दूसरों को भी फैलाया। भाजपा सरकार ने इस कुंभ को बंद करने का कोई आदेश नहीं दिया। वो तो देश में लगातार बढ़ रहे कोरोना के आकड़ों से लोगों में भय व्याप्त हो गया।

ऐसे में हरिद्वार में चल रहे महाकुंभ में उमड़ी भीड़ को देखते हुए निरंजनी अखाड़े ने खुद कुम्भ का समापन करने का ऐलान कर दिया। दरअसल, तीसरे शाही स्नान के बाद कई साधुओं में जुखाम के लक्षण देखने को मिलें, जिसके बाद 17 अप्रैल को महा कुंभ की समाप्ति का निर्णय लिए गया।

यह धर्मांधता भारत में ही नहीं दुनिया भर में है। कितने ही देशों में चर्चों ने अपने दरवाजे पिछले फरवरी-मार्च से लगातार खुले रखे। जहां भी धर्म समर्थक सरकार थी वहां उन्होंने अनदेखा किया।

भारत में सभी मंदिरों के अघोषित मालिक राष्ट्रीय स्वयं सेवा संघ के सरसंघ चालक मोहन भागवत भी कोविड ग्रस्त हो चुके हैं। कितने ही भाजपा के मंत्री, मुख्यमंत्री कोविड से छटपटाते रहे पर फैसले लेते समय धर्म का धंधा उन पर छाया रहा। उन्होंने मंदिरा में भी जाना चालू रखा, घरों में हवन पूजाएं कराईं, चुनावी सभाओं में भाग लिया, अफसरों से मिले, कमाई के अवसर चालू रखे। हां भूल कर भी वे उन मजदूरों की ओर नहीं गए जो कोविड के डर के कारण पिछले साल पैदल चल कर घर पहुंचे और फिर वापस आए और अब दूसरी लहर में फिर लौट रहे हैं।

हरिद्वार के कुंभ के लिए पुलिस ने एतिहात के तौर पर जगह-जगह पोस्ट लगा कर आरटी-पीसीओर रिपोर्ट चेक करना चालू रखा लेकिन लोग मुख्य मार्ग छोड़ कर खेतों, जंगलों, गांवों से उबड-ख़ाबड़ सडक़ों से जाने लगे हैं। वे गांवों की सडक़ों को तो नष्ट कर ही रहे हैं, बिना जांच के जाने की वजह से जहां से गएं वहां वायरस छोड़ते गएं। जो गांव किसी तरह से अब तक बचे हुए थे वे अब गंगा मैया की कृपा से कोरोना ग्रस्त हो जाएं तो बड़ी बात नहीं।

बीते माह देश की घटनाओं की दो टाइमलाइन दिखी। एक मौत और मायूसी से जुड़ी घटनाओं का सिलसिला तो दूसरी का वास्ता आस्था, त्योहार और जमावड़े से था। इस दूसरे सिलसिले से राजनीतिक नेताओं को कोई परहेज़ नहीं। इस जमावड़े को वे निरापद मानते हैं क्योंकि इसमें शामिल लोगों पर ऊपर बैठे देवता अपनी कृपा बरसा रहे हैं। कोरोना के बढ़ते संक्रमण के कारण एक बार फिर प्रवासी मज़दूरों के हुजूम दिखाई दियें। एक बार फिर वे बोरिया-बिस्तर बांध कर ट्रेनों से घर लौटते दिखाई पड़ें। कई शहरों में 'कर्फ्यू' का ऐलान हुआ। किसी सामाजिक और धार्मिक समारोह में 50 से ज़्यादा लोगों के इकट्ठा होने पर पाबंदी लगाई गई।

लेकिन दूसरी तरफ लाखों लोगों के 'पवित्र स्नान' के मंज़र भी दिखें। लोगों का विशाल हुजूम कुंभ मेले में नदियों में डुबकी लगा रहा था। मेनस्ट्रीम मीडिया जिन्हें श्रद्धालु कह रहा था वे नदियों के पानी में अपने पाप धो रहे थें, जबकि कोविड के केस तूफ़ानी गति से बढ़ते हुए पिछले सारे रिकार्ड तोड़ते जा रहे थें।

बता दें कि हरिद्वार में महाकुंभ में मौजूद लगभग 2 लाख से अधिक लोगों का कोरोना टेस्ट कराया गया, जिसमें 1701 लोगों की रिपोर्ट पॉजिटिव आयी। जानकारी के अनुसार कुंभ में शामिल कई लोगों की अभी रिपोर्ट आनी बाकी है जिसमें कोरोना पॉजिटिव लोगों के आंकड़े बढ़ने के आसार हैं।

कोरोना का कहर: वैक्सीन को लेकर उलझन!

निमांषी पांडेय

सरकार ने 1 मई से 18 साल से अधिक उम्र वालों के लिए वैक्सिनेशन शुरू करने का ऐलान किया है। इससे टीकाकरण अभियान के चौथे चरण में 60 करोड़ नए लोग वैक्सीन लगवा पाएंगे। इससे पहले के तीन चरणों में केंद्र ने 30 करोड़ लोगों को वैक्सीन लगवाने के लिए योग्य करार दिया था। इसके साथ केंद्र ने राज्यों और निजी अस्पतालों को भी कंपनियों से सीधे टीका खरीदने की इजाजत दी है।

देश में कंपनियां जितनी वैक्सीन बनाएंगी, उनमें से आधा केंद्र लेगा। बाकी बचे हिस्से से राज्यों और निजी अस्पतालों को सप्लाई की जाएगी। कोरोना की दूसरी लहर को देखते हुए ये अच्छे कदम हैं। लेकिन इन्हें लेकर कुछ उलझनें और सवाल भी हैं। पहला सवाल तो यही है कि क्या इतने व्यापक स्तर पर टीकाकरण अभियान के लिए हमारे पास वैक्सीन है? अभी तक देश में लोगों को वैक्सीन के 13 करोड़ से अधिक डोज दिए गए हैं, जिनमें से 11.1 करोड़ को दूसरा डोज नहीं लगा है। ऐसे में एक अनुमान के मुताबिक, 1 मई के बाद सभी योग्य लोगों के वैक्सिनेशन के लिए 1.2 अरब डोज की जरूरत पड़ सकती है। अभी तक लग रहा है कि जून से देश में हर महीने 20 करोड़ डोज आने लगेंगे। उससे पहले खुले बाजार के लिए बहुत अतिरिक्त सप्लाई नहीं हो पाएगी। ऐसे में 1 मई से वैक्सिनेशन सेंटरों पर जो भारी भीड़ उमड़ेगी, उनमें से ज्यादातर को निराश वापस लौटना पड़ सकता है।

दूसरे, जून के बाद वैक्सीन की सप्लाई में अच्छी बढ़ोतरी के बाद भी लंबे समय तक मांग की तुलना में इसकी आपूर्ति कम बनी रहेगी। दूसरा सवाल यह है कि कंपनियों के पास राज्यों से वैक्सीन की जो मांग आएगी, वे किस आधार पर पूरा करेंगी? सीमित सप्लाई के बीच हर राज्य चाहेगा कि उसे अधिक से अधिक वैक्सीन मिले। अच्छा तो यही होगा कि टीके की आपूर्ति जोखिम के स्तर को देखते हुए की जाए। जहां खतरा अधिक हो, उसे अधिक सप्लाई मिले। और इसके लिए केंद्र के स्तर पर ही पहल होनी चाहिए।

केंद्र ने निजी अस्पतालों को भी कंपनियों से सीधे वैक्सीन खरीदने का अधिकार दिया है। अभी सीरम ने केंद्र की नई नीति के मुताबिक कोविशील्ड की खातिर राज्यों के लिए 400 रुपये और निजी अस्पतालों के लिए 600 रुपये की कीमत तय की है। अगर इसे आधार मानें तो लगता है कि राज्यों की तुलना में निजी अस्पतालों के लिए टीका महंगा होगा। इसका यह भी मतलब है कि निजी अस्पतालों को अधिक टीका बेचने से उनका मुनाफा भी बढ़ेगा। ऐसे में क्या राज्यों को टीका बेचने में कंपनियों की दिलचस्पी घट नहीं सकती है? एक और बात यह है कि कंपनियों से बड़े निजी अस्पताल तो वैक्सीन खरीद पाएंगे, लेकिन इस देश में बड़ी संख्या में छोटे अस्पताल भी हैं, उन्हें इसकी सप्लाई कैसे मिलेगी? इन उलझनों को दूर करने के लिए केंद्रीय स्तर पर पहल होनी चाहिए। यह काम नेशनल टास्क फोर्स के जिम्मे किया जा सकता है।

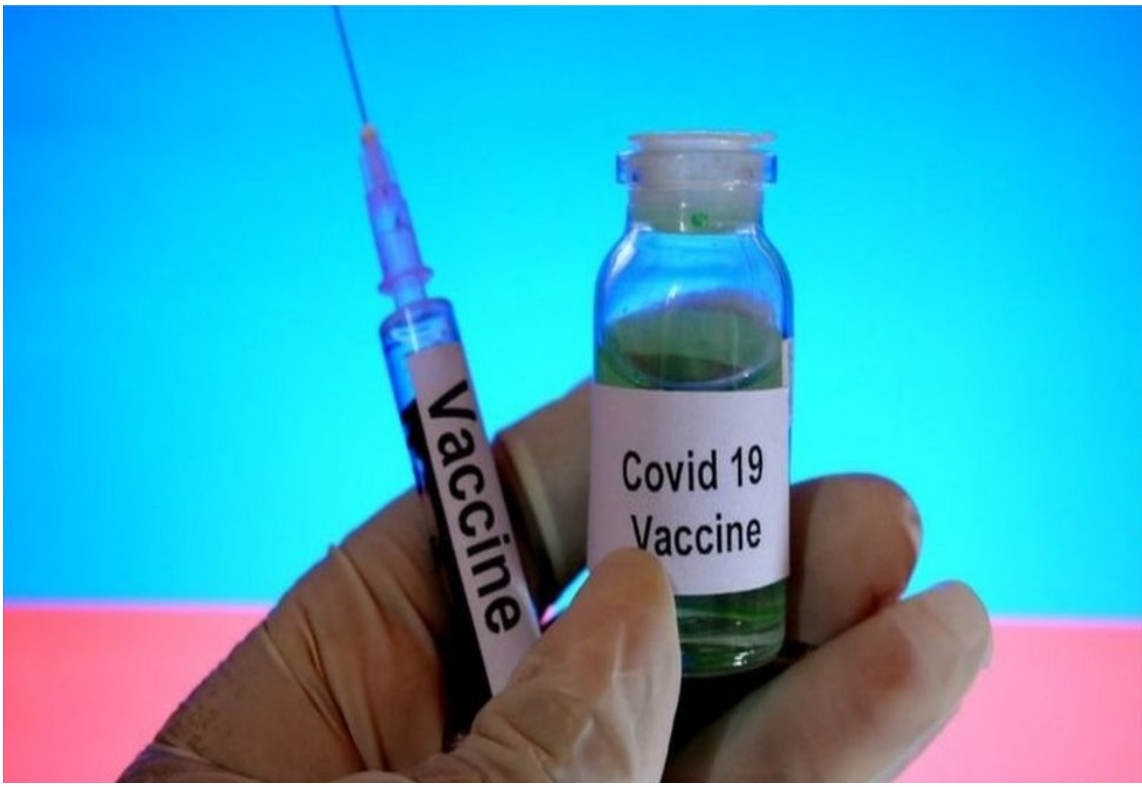

भारत को संकट में घिरा देख दुनिया ने बढ़ाए मदद को हाथ, जानें अब तक किन देशों से आई राहत!

भारत में कोरोना की दूसरी लहर कहर बरपा रही है। देश के कई राज्यों में महामारी बेकाबू हो गई है। भारत को मुश्किल में फंसा देख उसके तमाम विदेशी मित्रों ने तेजी से मदद भेजनी शुरू कर दी है। अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, सिंगापुर, दुबई समेत दुनिया के तमाम मुल्कों से भारत की मदद के लिए हाथ आगे बढ़े हैं। कहीं से दवाएं, कहीं ऑक्सीजन प्लांट तो कही से वेंटिलेटर समेत दूसरे उपकरण भेजे जा रहे हैं। आइए जानते हैं कहां से कौन सी मदद भारत के लिए भेजी जा रही है।

जर्मनी देगा ऑक्सीजन उत्पादन संयंत्र –

भारत में जर्मनी के राजदूत वाल्टर जे. लिंडनर ने कहा कि महामारी में भारत ने टीकों और दवाओं का उत्पादन करके दुनिया और हमारी मदद की। अब हमें मुश्किल में फंसे दोस्तों की मदद करने की जरूरत है। हम भारत को एक बड़े ऑक्सीजन उत्पादन संयंत्र को भेजने के लिए तैयार हैं। इस संयंत्र से काफी लोगों को ऑक्सीजन मुहैया कराने में मदद मिलेगी। संयंत्र को यहां कैसे लाया जाए इस मसले पर हम विदेश मंत्रालय और रेड क्रॉस समेत अन्य के संपर्क में हैं।

सिंगापुर कर रहा हर तरह की मदद मदद –

सिंगापुर सरकार ने महामारी से जूझ रहे भारत की मदद के लिए बढ़चढ़ कर मदद की है। सिंगापुर ने ऑक्सीजन के कंटेनर और सिलेंडरों की खेप भेजी है। सिंगापुर की वायुसेना ने बुधवार को पश्चिम बंगाल के लिए दो सी-130 विमानों से ऑक्सीजन सिलेंडर पहुंचाए। सिंगापुर के विदेश मंत्रालय में उपमंत्री डॉ. मलिकी ओसमान ने बुधवार को भारतीय उच्चायुक्त पी कुमारन को ऑक्सीजन सिलेंडर से भरे दो विमान सौंपे। उन्होंने महामारी के समय सिंगापुर को जरूरी सामान की आपूर्ति करते रहने के लिए भारत सरकार का शुक्रिया भी अदा किया।

कनाडा, द. कोरिया और न्यूजीलैंड ने बढ़ाया हाथ –

कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने कहा है कि उनका मुल्क भारत को एक करोड़ डॉलर की आर्थिक मदद मुहैया कराएगा। उन्होंने बताया कि विदेश मंत्री मार्क गार्नो की इस संदर्भ में एस जयशंकर से बात हुई है। दक्षिण कोरिया ने कहा है कि वह भारत की मदद के लिए ऑक्सीजन कंसेंट्रेटर और कोरोना के इलाज में इस्तेमाल होने वाली किट एवं अन्य चिकित्सकीय सामानों की आपूर्ति करेगा। न्यूजीलैंड भारत की मदद के लिए रेड क्रॉस को करीब 7,20,365 अमेरिकी डॉलर की आर्थिक मदद मुहैया कराएगा।

अमेरिका हर तरह की मदद को तैयार –
अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा है कि अमेरिका भारत को हर वह मदद भेज रहा है जिसकी कोरोना के खिलाफ जंग में उसे जरूरत पड़ेगी। उन्होंने दोहराया कि भारत ने भी पिछले साल अमेरिका की मदद की थी जब अमेरिका कोरोना की पहली लहर की चपेट में था। समाचार एजेंसी पीटीआइ के मुताबिक अमेरिका की ओर से भेजी जा रही मदद में रेमडेसिविर और अन्य दवाएं भी शामिल हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि हम कोविड वैक्सीन बनाने की प्रणाली के लिए जरूरी सामग्री और कलपुर्जों को भेज रहे हैं।

यूएन भी आया साथ, ब्रिटेन से आई मदद –
संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंतोनियो गुटेरस के उप प्रवक्ता फरहान हक ने बताया कि संयुक्त राष्ट्र ने भारत को अपने एकीकृत आपूर्ति श्रृंखला के जरिए हर संभव मदद की पेशकश की है। इसको लेकर हमारे अधिकारी भारतीय अधिकारियों के संपर्क में हैं। ब्रिटेन से 100 वेंटिलेटर और 95 ऑक्सीजन संकेद्रक की खेप भारत पहुंच गई है। ब्रिटेन ने कहा है कि वह इस हफ्ते 495 ऑक्सीजन कंसेंट्रेटर, 120 नॉन इनवेसिव वेंटिलेटर और 20 मैनुअल वेंटिलेटर समेत अन्य जरूरी उपकरणों की आपूर्ति करेगा।

ऑस्ट्रेलिया और फ्रांस भी भारत के साथ –
ऑस्ट्रेलिया ने 500 वेंटिलेटर, 10 लाख सर्जिकल मास्क, पांच लाख सुरक्षात्मक मास्क, चश्मे और फेस शील्ड की आपूर्ति करने की बात कही है। वहीं फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुअल मैक्रों के कार्यालय की ओर से जानकारी दी गई है कि जरूरी सामानों की खेप इस हफ्ते भारत पहुंच जाएगी। इसमें आठ ऑक्सीजन जेनरेटर भी शामिल होंगे। बड़ी बात यह कि हर जेनरेटर में एक अस्पताल के 250 बेड के लिए ऑक्सीजन की आपूर्ति करने की क्षमता है। फ्रांस ने इस लड़ाई में भारत के साथ हर पल खड़ा रहने की बात भी कही है।

रूस से जल्द आएगी मदद –
अमेरिका और रूस से चिकित्सा आपूर्ति की पहली खेप के गुरुवार को तक भारत पहुंच जाने की उम्मीद है। समाचार एजेंसी पीटीआइ ने सूत्रों के हवाले से बताया है कि चिकित्सा आपूर्ति लेकर एक अमेरिकी विमान के बृहस्पतिवार को पहुंचने की संभावना है जबकि रूसी विमान के बृहस्पतिवार रात तक पहुंचने की उम्मीद है। इस बीच पीएम मोदी ने बुधवार को रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से फोन पर बात की और मदद के लिए उनका शुक्रिया अदा किया। इससे पहले पीएम मोदी ने अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन से बात की थी।

राहुल का मोदी सरकार पर हमला, कहा- खोखले भाषण नहीं, समाधान चाहता है देश!

पूरा देश इस समय महामारी कोरोना वायरस से जूझ रहा है। कोरोना के मरीजों की संख्या में लगातार बढ़ोत्तरी हो रही है। कोरोना पर काबू पाने के लिए कई कई राज्यों में लॉडकाउन और नाइट कर्फ्यू लगाया गया है। इसी बीच कई राज्यों में ऑक्सीजन की कमी को लेकर हाहाकार मचा हुआ है। इस मुश्किल वक्त में सभी को एक साथ आगे बढ़ने की जरूरत है। ऐसे में राजनेता एक दूसरे पर बयान बाजी करने से बाज नहीं आ रहे है। कोरोना के बढ़ते मामले को लेकर कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी लगातार मोदी सरकार पर निशाना साध रहे है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी का कहना है कि कोरोना के रोजाना सैकड़ों लोगों की मौत हो रही है। सरकार झूठे वादा और खोखले भाषण के कुछ नहीं कर पा रही है।

लोगों की मौत के लिए केंद्र सरकार जिम्मेदार –

राहुल गांधी ने कई शहरों में ऑक्सीजन और आईसीयू बेड की कमी की खबरों के बीच बीते माह मोदी सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने केंद्र सरकार पर आरोप लगाया कि इस स्थिति के लिए सरकार जिम्मेदार है। उन्होंने ट्वीट कर लिखा, ऑक्सीजन के स्तर में गिरावट का कारण कोरोना हो सकता हैं। लेकिन यहां ऑक्सीजन और आईसीयू बेड की कमी है, जिस कारण कई लोगों की मौत हो रही है। ये भारत सरकार पर निर्भर करता है।

झूठे उत्सव और खोखले भाषण नहीं, देश को समाधान दो –

आपको बता दें कि गबीते माह महाराष्ट्र के पालघर जिले में एक अस्पताल में आग लगने से कोविड पीड़ित 13 मरीजों की मौत हो गई थी। इस पर राहुल ने मोदी सरकार को घेरते हुए कहा कि देश की जनता मर रही है, लेकिन केंद्र में बैठी सरकार सिर्फ तमाशा देख रही है। देश की आज जो स्थित है उसके लिए मोदी सरकार जिम्मेदार है। क्योंकि उन्होंने कभी भी गरीब लोगों के बारे में नहीं सोचा। यह सरकार केवल पूंजीपति के हित में ही काम कर रही है। राहुल ने ट्वी कर लिखा, भारत में संकट सिर्फ कोरोना नहीं, केंद्र सरकार की जन विरोधी नीतियां हैं। झूठे उत्सव और खोखले भाषण नहीं, देश को समाधान दो।

युवाओं के प्रति अपने उत्तरदायित्व से पल्ला झाड़ रही सरकार : सोनिया गांधी–

इस बीच कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने कहा कि यह हैरान करने वाली बात है कि पिछले साल के कड़वे अनुभवों और लोगों को हुई तकलीफ के बावजूद सरकार लगातार मनमानी और भेदभावपूर्ण नीति पर अमल कर रही है। नई नीति के तहत सरकार 18 से 45 साल आयु वर्ग के लोगों को मुफ्त टीका उपल कराने की अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ चुकी है। उन्होंने कहा कि देश की जनता उनको कभी माफ नहीं करेगी।

फिल्म 'चेहरे' के पोस्टर पर क्यों नहीं दिखीं थीं रिया चक्रवर्ती? प्रोड्यूसर ने अब बताई असली वजह!

कोरोना के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। इसका असर बॉलीवुड पर भी देखने को मिल रहा है, जिससे कई फिल्मों की रिलीज टल गई है। पहले अमिताभ बच्चन-इमरान हाशमी स्टारर फिल्म चेहरे की रिलीज के भी कयास लगाए जा रहे थे, लेकिन कोरोना के चलते कई राज्यों में लॉकडाउन लगा दिया गया है और सिनेमाघरों को भी बंद कर दिया गया है। मौजूदा हालात को देखते हुए मेकर्स के सामने फिल्मों को ओटीटी पर रिलीज करवाने के लिए अलावा कोई दूसरा ऑप्शन नहीं है।

एक ऐसी ही फिल्म 'चेहरे' भी है। पहले फिल्म को मेकर्स 30 मार्च को रिलीज करने वाले थे, जिसे आगे बढ़ाकर 9 अप्रैल कर दिया गया था और अब इसे अनिश्चितकाल के लिए टाल दिया गया है हालांकि मेकर्स ने इसे ओटीटी पर रिलीज करने से इनकार कर दिया है। बॉलीवुड प्रोड्यूसर-डिस्ट्रीब्यूटर आनंद पंडित ने बताया कि इस फिल्म का हमने 100 पर्सेंट दिया है और हम इसे सिनेमाघर में ही रिलीज करना चाहते हैं।

ज्ञात हो कि मौजूदा हालात में फिल्म को थिएटर में रिलीज करना किसी चुनौती से कम नहीं है, सिर्फ बिजनेस के कारण ही नहीं, बल्कि मार्केटिंग के नजरिए से भी।

चेहरे फिल्म के पोस्टर पर रिया चक्रवर्ती के न दिखने पर बात करते हुए आनंद पंडित ने इंडियन एक्सप्रेस से कहा, 'मुझे उनका नाम इसमें शामिल करने का कोई मुख्य कारण नजर नहीं आता। वह फिल्म के आठ आर्टिस्ट में से एक हैं। हमने उन्हें बहुत पहले ही साइन कर लिया था और उन्होंने अपना हिस्सा अच्छे से पूरा कर लिया है। इसलिए, हम उन्हें अच्छा काम करने वालों में देखते हैं। मैं अपनी फिल्म के फायदे के लिए उनका अनुचित लाभ नहीं उठाना चाहता। इसलिए हमने फिल्म का दूसरा पोस्टर रिलीज किया जिसमें उनके नाम का जिक्र नहीं था। वह अपने जीवन में काफी उथल-पुथल से गुजर रही हैं, और हम और अधिक मुश्किलों को जोड़ना नहीं चाहते हैं। हमने उन्हें फिल्म में भी तभी लिया, जब वह सहज थीं।'

आपको बता दें कि फिल्म चेहरे में अमिताभ बच्चन, इमरान हाशमी, अनु कपूर, क्रिटल डीसूजा, दृष्टिमान चटर्जी और रिया चक्रवर्ती मुख्य भूमिका में हैं।

बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान की मच अवेटेड एक्शन फिल्म 'राधे: योर मोस्ट वांटेड भाई' को लेकर एक बड़ी खबर सामने आई है।

फिल्म 'राधे' सिनेमाघरों के साथ-साथ ओटीटी प्लेटफॉर्म पर भी रिलीज की जाएगी। सलमान खान की 'राधे' फिल्म के ओटीटी राइट्स जी5 के पास हैं। महाराष्ट्र समेत देश के कई हिस्सों में कोरोना वायरस को थामने के लिए लगाये गये प्रतिबंधों के चलते राधे की रिलीज को लेकर तरह-तरह की खबरें आ रही थीं। सलमान की फिल्म 'राधे' के अलावा फिल्म 'टाइगर 3', 'किक 2' और 'कभी ईद कभी दीवाली' भी आने वाले समय में रिलीज को तैयार हैं।

फिल्म 'राधे: योर मोस्ट वांटेड भाई' की रिलीज को लेकर ये जानकारी सलमान खान के ऑफिशियल प्रोडक्शन अकाउंट से दी गई है। इसमें लिखा है, 'ईद का असली जश्न! राधे- योर मोस्ट वांटेड भाई, दुनिया भर में कई प्लेटफार्मों पर एक साथ रिलीज की जाएगी।' बीते दिनों सलमान खान ने फिल्म दिखाने वालों को आश्वासन दिया था कि वे अपनी फिल्म को केवल थिएटरों में रिलीज करेंगे, ना कि सीधे ओटीटी पर ले जाएंगे। लेकिन कोरोना को देखते हुए फिल्म को अब ओटीटी पर भी रिलीज किया जा रहा है।

सलमान की नई फिल्म का ट्रेलर कई मायनों में उनकी पुरानी फिल्म वांटेड की याद दिलाता नजर आ रहा है। फिल्म का नया ट्रेलर कैसा है और इसमें क्या क्या खास बाते हैं। आइए एक नजर डालते हैं इससे जुड़ी कुछ अहम बातों पर।

1. सलमान खान का वही पुराना अंदाज –

राधे में सलमान खान ड्रग माफिया को पकड़ने वाले स्पेशल पुलिस ऑफिसर के रोल में हैं। एक ही लाइन में आप समझ जाएंगे कि सलमान अपनी पिछली फिल्मों को ही राधे में कॉपी करते नजर आ रहे हैं। डायलॉग से लेकर स्टंट और यहां तक कि लुक्स में भी वो आपको वॉन्टेड और दबंग की याद दिलाएंगे।

2. दिशा पाटनी की कास्टिंग –

बेशक भारत फिल्म में दिशा और सलमान की पेयरिंग पसंद की गई थी। दोनों का स्लो मोशन गाना भी हिट हुआ था। लेकिन पर्दे पर दिशा के साथ सलमान का फ्लर्ट करना और फिर दिशा का जैकी श्रॉफ की बहन के रोल में आना।।। उम्र के ऐसे फासले को पचाना थोड़ा मुश्किल है।

3. वही पुराना एंट्री स्टाइल –

माफिया से परेशान होकर पुलिस की मीटिंग और फिर सलमान की धमाकेदार एंट्री – कई फिल्मों में ये ओपनिंग सीन कॉमन हो चुका है। हालांकि सलमान के फैन्स के लिए सीटी बजाने का पूरा स्कोप है। और जो साउथ की फिल्में ज्यादा देखते हैं या दिमाग का यूज करते हैं – उनको थोड़ी निराशा हो सकती है।

4. दसवी पास डायलॉग –

सुल्तान के बाद से सलमान खान से मुंह से कुछ नए अंदाज का डायलॉग सुनने का इंतजार कर रहे हैं तो राधे से उम्मीद नहीं रखें। सभी इधर की हवा, उधर से वाले अंदाज में ही हैं। मानो भाईजान ने कुछ नया न आजमाने की कमि

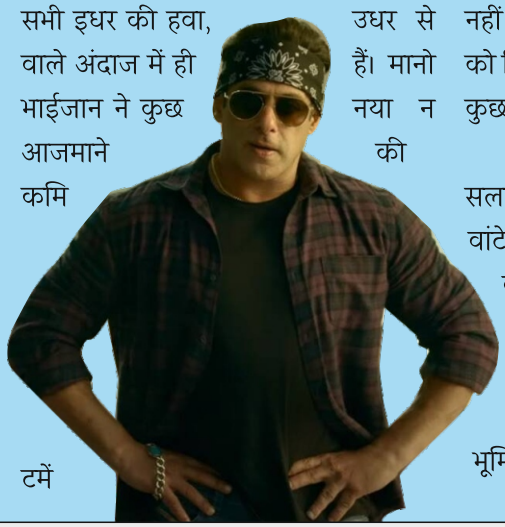

टमें ट ले ली हो। हालांकि तुम्हारे दसवीं पास करने से पहले वाला डायलॉग फैन्स को थोड़ा यूनीक लग सकता है।

5. रणदीप हुड्डा का हेयर स्टाइल –

रणदीप हुड्डा ने सलमान खान से स्वैग दिखाने का सबक अच्छी तरह सीख लिया है। डायलॉग में भले ही वह इंप्रेसिव न दिखे हों लेकिन यूनीक हेयरस्टाइल वाले विलेन का लुक दर्शकों को एकदम याद रह जाएगा।

6. म्यूजिक का कितना दम –

करीब 3 मिनट के ट्रेलर में म्यूजिक ठीक ठाक ही लगा है। हालांकि जैक्लीन के साथ सलमान के गाने की झलक दिखी है। हो सकता है कि फिल्म की अलबम का वही यूएसपी हो।

7. प्रभुदेवा का डायरेक्शन –

सलमान के लुक्स से लेकर लोकेशंस तक में आपको वॉन्टेड की याद आएगी। बेशक फिल्म को एक दशक हो चुका है लेकिन प्रभुदेवा उससे अभी तक निकल नहीं पाए हैं। हालांकि राधे साउथ कोरियन फिल्म द आउटलाज की रीमेक बताई जा रही है। बाथरूम फाइट वाला सीन भी ओरिजिनल नहीं है। फिर भी फिल्म का इंतजार है ये देखने को कि क्या फिल्म में सलमान और प्रभुदेवा कुछ नया पेश कर पाते हैं या नहीं।

सलमान की फिल्म फिल्म 'राधे: योर मोस्ट वांटेड भाई' 13 मई को रलीज होगी। सलमान की फिल्म 'राधे: योर मोस्ट वांटेड भाई' का निर्देशन प्रभु देवा ने किया है। फिल्म में सलमान के साथ दिशा पाटनी, रणदीप हुड्डा और जैकी श्रॉफ भी प्रमुख भूमिकाओं में हैं।

93वें ऑस्कर सामारोह में इरफान खान और भानु अथैया को किया गया याद!

अमेरिका के लॉस एंजिल्स में आयोजित 93वें एकेडमी अवॉर्ड समारोह में जाने-माने दिवगंत अभिनेता इरफान खान को याद किया गया। इसी के साथ एक भारतीय के नाते पहला ऑस्कर पुरस्कार पानेवाली कॉस्ट्यूम डिजाइनर भानु अथैया को भी याद किया गया।

ऑस्कर समारोह की शुरुआत में सालभर में दुनिया भर में दिवंगत हुए तमाम नामी कलाकारों, निर्माता, निर्देशकों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई जिसमें भारत से इरफान खान को भी 'मेमोरियम' सेगमेंट में शामिल किया गया था।

इरफान खान ने 'लाइफ ऑफ पाई', 'जुरासिक वर्ल्ड', 'इंफर्नो' जैसी तमाम हॉलीवुड फिल्मों के अलावा भी कई अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बनाये गये प्रोजेक्ट्स में भी काम किया था और एक उम्दा अभिनेता के तौर पर अपनी पहचान बनाई थी। पिछले साल 29 अप्रैल को 53 वर्षीय इरफान खान की मौत दुर्लभ किस्म के कैंसर की वजह से मुम्बई के धीरूभाई कोकिलाबेन अस्पताल में निधन हो गया था।

इरफान खान के अलावा 93वें ऑस्कर समारोह में जानी-मानी भारतीय कॉस्ट्यूम डिजाइनर भानु अथैया के प्रति भी श्रद्धांजलि व्यक्त की गई। भानु अथैया ने 60 के दशक की बड़ी-बड़ी फिल्मों से लेकर 'लगान' तक कई लोकप्रिय फिल्मों के कॉस्ट्यूम डिजाइन किये थे।

भानु अथैया को 1982 में रिलीज हुई हॉलीवुड फिल्म 'गांधी' के लिए कॉस्ट्यूम डिजाइन करने के लिए ऑस्कर अवॉर्ड से नवाजा गया था। 'गांधी' के लिए पुरस्कार पाकर भानु अथैया ने ऑस्कर पानेवाली पहली भारतीय शख्स होने का गौरव हासिल किया था। 'गांधी' को कुल 8 ऑस्कर पुरस्कारों से नवाजा गया था।

भानु अथैया की मौत 91 साल की उम्र में 15 अगस्त, 2020 को ब्रेन कैंसर की बीमारी के चलते मुम्बई में हो गई थी।

महामारी से बचने के लिए माने डॉ बीएन मिश्रा की सलाह, छू भी नही पायेगा कोरोना वायरस!

आज जहां एक ओर कोरोना के नए-नए स्वरूपों से पूरी दुनिया जूझ रही है और इसकी रोकथाम के लिए नए-नए इलाज ईजाद किये जा रहे है, वहीं ये महामारी है कि थमने का नाम नहीं ले रही। कोरोना से संक्रमित मरीजों की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा है। इसको लेकर लोगों में काफी दहशत का माहौल बना हुआ है। भारत में वैक्सीन तो है, लेकिन इसे लेकर लोगों में दुविधा अभी भी कायम है। सोशल मीडिया पर अफवाहों का अम्बर लगा हुआ है और लोगों में डर बढ़ता जी जा रहा है। ऐसे में न्यूज़ बकेट की टीम इन तमाम मुद्दों पर सर सुंदर लाल चिकित्सालय, बीएचयू में न्यूरोलॉजी विभाग के विभागाध्यक्ष

डॉ बीएन मिश्रा से ख़ास मुलाकात की, आइये जानते हैं, बातचीत के कुछ प्रमुख अंश -

प्रश्न - भारत में कोरोना का संक्रमण तेजी से फ़ैल रहा है, कहीं ऑक्सीजन की कमी है तो कहीं वैक्सीन की, इस पूरे हालात पर आपकी क्या राय है?

डॉ मिश्रा - भारत में कोरोना इडियट्स की कमी नहीं है। यह लोग आज भी लापरवाही बरत रहे हैं और कोरोना की गाइडलाइन का पालन नहीं कर रहे हैं। यह वही लापरवाह लोग हैं जिनके कारण इस खतरनाक महामारी का संक्रमण तेजी से फैल रहा है। सरकार के द्वारा लगाई गई लाख पाबंदियों के बाद भी यह लोग हैं कि मानने को तैयार नहीं। अभी भी बहुत से ऐसे लोग हैं जो न तो मास्क लगा रहे हैं और ना ही सोशल डिस्टेंसिंग का पालन कर रहे हैं। बेफिक्र होकर सड़कों और बाजारों में लोगों का इस प्रकार से निकलना इस महामारी के अगले चरण को दावत दे रहा है।

प्रश्न – कोरोना के लक्षण दिखने के बाद क्या करें?

डॉ मिश्रा – ऐसी स्थिति में अगर आप में कोरोना के कोई भी लक्षण नजर आए तो, सबसे पहले डॉक्टर से संपर्क करें। इस वक्त किसी भी प्रकार की लापरवाही इंसान के लिए जानलेवा साबित हो सकती है। घबराए नहीं और इस महामारी का डटकर सामना करें। कोरोना के लक्षण दिखने पर तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें और उन के द्वारा दिए गए दिशा निर्देशों का पालन करें। साथ ही साथ अपने इम्यूनिटी को बूस्ट करने के लिए खानपान का विशेष ध्यान रखें।

प्रश्न – क्या कोरोना की वैक्सीन लगवाने के बाद सब ठीक हो जाएगा?

डॉ मिश्रा – मौजूदा हालात में सभी को वैक्सीन जरूर लगवाने चाहिए। मैं दावा करता हूं कि वैक्सीन लगने के बाद किसी की भी मृत्यु नहीं होगी। वैक्सीन के दोनों डोज लेने के बाद मनुष्य के शरीर में इम्यूनिटी मजबूत हो जाती है, इसलिए सभी अपना ध्यान रखें और वैक्सीन जरूर लगवाएं।

प्रश्न – महामारी से ग्रसित होने पर कौन सी दवाइयों का करें इस्तेमाल?

डॉ मिश्रा – अभी भी बहुत से लोग महामारी को लेकर लापरवाह है। अब लोग बीमार होने पर घर पर ही अपने मन से दवाइयां खाकर समय बिता रहे हैं, जिसके कारण लोगों में इसका संक्रमण तेजी से फैल रहा है। उनके साथ उनके घरवालें भी इसकी चपेट में आ रहे हैं। उन्होंने बताया कि महामारी का लक्षण दिखने पर सबसे पहले 3 दिन तक 12एमजी की एवरमेक्टिन टैबलेट लें, इसके साथ ही 500एमजी की अजिथ्रोमायसिन सुबह के समय 5 दिनों तक लें। इन दोनों दवाइयों के अलावा 5 दिनों तक सुबह-शाम डॉक्सीसाइक्लिन अवश्य लेना चाहिए।

प्रश्न – इन दिनों, सोशल मीडिया पर कोरोना महामारी से जुड़ी कई अफवाहें फ़ैल रही हैं, इनपर आपकी क्या राय है?

डॉ मिश्रा – कोरोना महामारी मनुष्य को सिर्फ 1 हफ्ते का ही समय देता है और इसी एक हफ्ते में लोगों को अपना ध्यान रखने की विशेष जरूरत है। ऐसे में लोग घरेलू उपाय और बाबा जी के भस्म जैसी चीजों का उपयोग करके अपने रोग को और बढ़ाते हैं, जिसके कारण आगे चलकर उन्हें घातक परिणामों का सामना करना पड़ता है। इसलिए इस महामारी के समय लोगों को सावधानी बरतने की विशेष जरूरत है, अफवाहों पर ध्यान न दें और किसी भी प्रकार का लक्षण दिखने पर फौरन उसकी जांच करा कर पर्याप्त इलाज जरूर करें। अन्यथा यह महामारी प्राण घातक साबित हो सकती है।

प्रश्न – वैक्सीन को लेकर है लोगों में दुविधा की स्थिति बनी हुई है, इस विषय में आप क्या कहना चाहेंगे?

डॉ मिश्रा – अभी भी बहुत से लोग हैं जो वैक्सीन से किनारा काट रहे हैं। लोग तमाम तरीकों के अफवाहों पर ध्यान दे रहे हैं। मगर वैक्सीन के सकारात्मक परिणामों को देखने को मंजूर नहीं है। यही कारण है कि इस महामारी का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है और यह महामारी बेकाबू तरीके से फैल रही है। डॉ मिश्रा ने बताया कि वैक्सीन को लेकर जो भी अफवाहें फैल रही हैं उन पर बिल्कुल ध्यान ना दें और जल्द से जल्द रजिस्ट्रेशन करा कर वैक्सीन अवश्य ले। ध्यान दें कि वैक्सीन की दोनों डोज लेने के बाद इंसान के मरने का खतरा नहीं के बराबर हो जाता है इसलिए अफवाहों पर बिल्कुल ध्यान ना दें और सभी लोग वैक्सीनेशन में भाग लें।

प्रश्न – भारतीय वैक्सीन कितनी कारगर है?

डॉ मिश्रा – विदेशों में रह रहे हैं मेरे डॉ मित्रों का कहना है कि भारत में बनी वैक्सीन की डिमांड पूरी दुनिया में है। भारत में बनी वैक्सीन कई प्रकार के वायरस से लड़ने में सक्षम है। उन्होंने बताया कि अमेरिका जैसे देशों में भारतीय वैक्सीन की मांग काफी अधिक है। साथ ही कहा कि आज अमेरिका इस महामारी पर नियंत्रण पाने में काफी हद तक सक्षम हो चुका है, जिसका मुख्य कारण भारतीय वैक्सीन ही है। इन सभी बातों ये साबित होता है कि भारतीय वैक्सीन काफी कारगर है। इसलिए लोगों को अब बढ़-चढ़कर भारत सरकार के टीकाकरण अभियान में हिस्सा लेना चाहिए।

हम आशा करते हैं कि डॉ बीएन मिश्रा के साथ बातचीत के अंश आपके लिए लाभकारी होंगे, और कोरोना वैक्सीन से जुड़ी दुविधाओं से आपको निजात मिली होगी। इस अंक में बस इतना ही, आप अपने सुझाव हमे ई-मेल के जरिये साझा कर सकते हैं।

डॉ बीएन मिश्रा
(विभागाध्यक्ष, न्यूरोलॉजी विभाग,
सर सुंदर लाल चिकित्सालय, BHU)

टीवी पत्रकार रोहित सरदाना का निधन, मीडिया जगत में शोक की लहर!

बीते माह टीवी पत्रकार रोहित सरदाना का कोरोना से निधन हो गया है। उनके निधन की खबर सुनकर मीडिया जगत में शोक की लहर दौड़ गई। कई पत्रकारों ने उनके निधन की खबर ट्वीट किया। उनके निधन की खबर सुनकर मीडिया जगत स्त हो गया। कई पत्रकारों ने उनके निधन पर ट्वीट कर शोक जताया। पत्रकारों के अलावा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यानाथ, मोदी सरकार में मंत्री स्मृति ईरानी समेत कई बड़े राजनेताओं ने भी उनके निधन पर शोक जताया।

रोहित सरदाना के निधन को लेकर वरिष्ठ पत्रकार राजदीप सरदेसाई ने ट्विटर पर लिखा, ''बहुत ही भयानक समाचार है। जाने-माने टीवी न्यूज एंकर रोहित सरदाना का निधन हो गया है। आज सुबह दिल का दौरा पड़ा। उनके परिवार के प्रति गहरी संवेदना।''

वहीं आजतक मीडिया संस्थान से जुड़ी पत्रकार चित्रा त्रिपाठी ने लिखा, ''हंसता-खेलता परिवार, दो छोटी बेटियाँ। उनके लिए इस दंगल को हारना नहीं था रोहित सरदाना जी। आज सुबह चार बजे नोएडा के निजी अस्पताल में आईसीयू में आपको ले ज़ाया गया और दिन चढ़ने के साथ ये बहुत बुरी खबर। कुछ कहने को अब बचा ही नहीं।''

वरिष्ठ पत्रकार सुधीर चौधरी ने लिखा, "अब से थोड़ी देर पहले हमारे साथी का फोन आया। उसने जो कहा सुनकर मेरे हाथ कांपने लगे। हमारे मित्र और सहयोगी रोहित सरदाना की मृत्यु की ख़बर थी। ये भगवान की नाइंसाफ़ी है। ओमः शान्ति।"

रोहित सरदाना के निधन पर शिव अरोरा ने भी ट्वीट कर संवेदना जताई। उन्होंने कहा, ''विदाई, रोहित भाई। यह विश्वास नहीं किया जा सकता है। कोई शब्द नहीं बचे हैं। आपको याद किया जाएगा, मेरे दोस्त।''

रोहित सरदाना के निधन पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शोक जाताया। उन्होंने लिखा, ''वरिष्ठ पत्रकार श्री रोहित सरदाना जी का निधन अत्यंत दुःखद है। वह जनपक्षीय पत्रकारिता के अप्रतिम हस्ताक्षर थे। प्रभु श्री राम से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति व शोकाकुल परिजनों को यह अथाह दुःख सहने की शक्ति प्रदान करें। शान्ति।"

रोहित सरदाना के निधन पर स्मृति ईरानी ने शोक जताया। उन्होंने लिखा, ''पत्रकारिता जगत के प्रतिभावान और लोकप्रिय वरिष्ठ पत्रकार रोहित सरदाना जी के असामयिक निधन के बारे में जानकर स्त हूं। उनके परिवार के प्रति संवेदनाएं व्यक्त करती हूं और ईश्वर से उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करती हूं। ओमः शान्ति।"

भारत में होने वाले टी20 विश्व कप पर आईसीसी का बड़ा बयान- हमारे पास 'बैकअप' प्लान है!

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद के अंतरिम मुख्य कार्यकारी अधिकारी ज्योफ अलार्डिस ने बुधवार को कहा कि उनके पास इस साल अंत में भारत में होने वाले टी20 विश्व कप के लिए 'बैकअप' (दूसरी) योजना है। लेकिन इस समय भारत में कोविड-19 मामलों में बढ़ोतरी के बावजूद देश से इसे हटाने के किसी भी विचार के बारे में नहीं सोच रहे हैं।

टी20 वर्ल्ड कप का आयोजन भारत में अक्टूबर-नवंबर में किया जाएगा, लेकिन पिछले कुछ दिनों में देश में रोज एक लाख से ज्यादा मामले सामने आ रहे हैं। कोविड-19 मामलों के बढ़ने के बावजूद इंडियन प्रीमियर लीग दर्शकों के बिना बंद स्टेडियम में चल रही है।

अलार्डिस ने वर्चुअल मीडिया राउंड टेबल के दौरान कहा, 'हम निश्चित रूप से टूर्नामेंट के लिए योजना के अनुसार ही आगे बढ़ रहे हैं।' उन्होंने कहा, 'हमारे पास 'दूसरी योजना' है, लेकिन हमने अभी उन योजनाओं के बारे में विचार नहीं किया है। हम भारतीय क्रिकेट बोर्ड के साथ काम कर रहे हैं, हमारे पास 'बैकअप' योजना है, जिसे जरूरत पड़ने पर ही शुरू किया जा सकता है।'

आईसीसी के क्रिकेट महाप्रबंधक अलार्डिस को हाल में मनु साहनी को 'छुट्टी' पर भेजने के बाद ही अंतरिम सीईओ बनाया गया था। ऑस्ट्रेलिया के 53 साल के अलार्डिस अपने देश के लिए घरेलू क्रिकेट में खेल चुके हैं, उन्होंने कहा कि आईसीसी यह समझने के लिए अन्य देशों की खेल संस्थाओं से भी संपर्क में है कि वे कोविड काल में किस तरह से अपने टूर्नामेंट आयोजित कर रहे हैं।

उन्होंने कहा, 'इस समय क्रिकेट कई देशों में खेला जा रहा है और हम उन सभी से सीख रहे हैं।' उन्होंने कहा, 'हम अन्य खेल संस्थाओं से बात कर रहे हैं कि वे क्या कर रहे हैं, हम इस समय अच्छी स्थिति में हैं, लेकिन यह भी मानते हैं कि दुनियाभर में चीजें तेजी से बदल रही हैं।'

अलार्डिस ने कहा, 'दो महीने के समय में विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल का समय भी आ रहा है, लेकिन हम दोनों के लिए योजनानुसार ही चल रहे हैं। संयुक्त अरब अमीरात ने पिछले साल इंडियन प्रीमियर लीग की मेजबानी की थी, वह भी इस बड़े अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट के आयोजन के लिए 'बैकअप' स्थल हो सकता है।

इस बातचीत के दौरान उनसे डीआरएस (अंपायर फैसला समीक्षा प्रणाली) के बारे में भी पूछा गया, जिसमें अंपायरों के फैसले विवादास्पद हो रहे हैं और जिन्हें भारतीय कप्तान विराट कोहली ने इंग्लैंड के खिलाफ सीमित ओवर की सीरीज के दौरान भ्रामक बताया था।

अलार्डिस ने कहा कि हाल में हुई आईसीसी की बोर्ड बैठक के दौरान डीआरएस पर 'अच्छी चर्चा' हुई थी। उन्होंने कहा, 'डीआरएस को स्पष्ट गलतियों को बदलने के लिए बनाया गया था। इसमें कोई भी बदलाव नहीं हुआ है।'

उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि जब आप बार-बार 'रीप्ले' देखते हो तो आपकी सामान्य प्रतिक्रिया यही होती है कि हम क्या कर सकते हैं। इसमें साफ दिख रही गलती को बदल दिया जाए। हम ऐसी स्थिति में पहुंच चुके हैं, जिसमें हम सही फैसले करने के लिए टेक्नालॉजी का इस्तेमाल कर रहे हैं, लेकिन 'परफेक्शन' (बिल्कुल सही) के लिए प्रयास असंभव हो जाता है। हम अभी जहां पर हैं, वहां बहुत सहज हैं।'

फ्रेंच ओपन पर कोरोना की मार, एक हफ्ते देरी से शुरू हो सकता है टूर्नामेंट!

साल का दूसरा ग्रैंड स्लैम फ्रेंच ओपन टेनिस का आयोजन अब एक हफ्ते की देरी से हो सकता है। पहले यह टूर्नामेंट 23 मई से आयोजित होना था। अब यह क्ले कोर्ट टूर्नामेंट 30 मई से 13 जून तक आयोजित किया जा सकता है, ताकि ज्यादा संख्या में दर्शक टूर्नामेंट का लुत्फ उठा सकें। पिछले साल भी कोरोना महामारी के चलते फ्रेंच ओपन चार महीने की देरी से आयोजित हुआ था। तब मई-जून की बजाय यह टूर्नामेंट सितंबर-अक्टूबर में आयोजित किया गया था। उस दौरान हर दिन सिर्फ एक हजार दर्शकों को इजाजत दी गई थी।

फ्रांस की खेल मंत्री रोक्साना मारासिनियू ने भी कोरोना वायरस के नए मामलों में बढ़ोतरी के कारण फ्रेंच ओपन टेनिस ग्रैंड स्लैम को कुछ दिनों के लिए टालने की बात कही थी। जिसके बाद फ्रांस की टेनिस खिलाड़ी एलीज कार्नेट ने खेल मंत्री और फ्रांस के राष्ट्रपति की आलोचना की थी।

कार्नेट ने कहा था, 'यह हमारे बीच का मसला है, लेकिन हमारी खेल मंत्री एक आपदा के समान हैं। मेरे पास उनके खिलाफ कहने को कुछ भी नहीं है। वह केवल खेल के लिए बुरे फैसले लेती हैं, जैसे उन्हें इसकी परवाह नहीं है। और मुझे पता है कि इसमें सरकार की भी सहमति है। मैंने सुना है कि एक सप्ताह के लिए टूर्नामेंट स्थगित होने पर और अधिक लोग आ सकते हैं। फिर भी मुझे लगता है कि यह स्वार्थ की पूर्ति के लिए लिया जाने वाला फैसला है। टूर्नामेंट की तारीख बढ़ाने से कैलेंडर ईयर प्रभावित होगा।'

पिछले बुधवार को फ्रांस में कोरोना से जुड़े नियमों को और कड़ा कर दिया गया था। हालांकि सभी पेशेवर खेल बंद दरवाजों के पीछे खेले जा रहे हैं। राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रोन ने मई के मध्य में सिनेमाघरों, संग्रहालयों और थियेटरों को फिर से खोलने की इच्छा व्यक्त की है। पुरुष एकल में स्पेन के राफेल नडाल ने पिछले साल रिकॉर्ड 13वीं बार फ्रेंच ओपन खिताब जीता था, जबकि महिला एकल में पोलैंड की इगा स्वियातेक चैम्पियन बनी थीं।

फेसबुक डाटा लीक पर (सर्ट-इन) ने भारतीय यूजर्स के लिए जारी की एडवाइजरी, दी यह सलाह!

भारत की साइबर सिक्योरिटी एजेंसी (CERTin) ने फेसबुक यूजर्स से उनके अकाउंट प्राइवेसी सेटिंग को मजबूत करने की सलाह दी है। हाल में फेसबुक की डेटा चोरी की घटना के मद्देनजर यह सलाह दी गई है। इनमें 61 लाख भारतीयों के खाते भी शामिल थे।

ज़ात हो कि सर्ट-इन साइबर हमलों का मुकाबला करने और फिशिंग तथा हैकिंग हमलों के खिलाफ भारतीय साइबर स्पेस की रक्षा करने वाली एक संघीय प्रौद्योगिकी संस्था है। इस संस्था की तरफ से जारी परामर्श में कहा गया है कि विश्व स्तर पर फेसबुक प्रोफाइल जानकारी को बड़े पैमाने पर चुराया गया है।

इन सूचनाओं में ईमेल पते प्रोफाइल आईडी पूरा नाम नौकरी का ब्यौरा फोन नंबर और जन्म तिथि शामिल है। इसमें आगे कहा गया कि हालांकि फेसबुक के अनुसार इन सूचनाओं में वित्तीय जानकारी स्वास्थ्य संबंधी जानकारी या पासवर्ड शामिल नहीं हैं लेकिन दुनिया भर के 45 करोड़ से अधिक फेसबुक प्रोफाइलों की जानकारी सार्वजनिक रूप से कई साइबर आपराधिक मंचों में मुफ्त में प्राप्त हैं। बता दें कि डेटा स्क्रेपिंग की मदद से हैकर्स किसी साइट पर उपल यूजर्स के डेटा को ऑटोमेटेड सॉफ्टवेयर से हासिल कर लेते हैं। इसमें उनका नाम, जगह इत्यादि जैसे डिटेल्स शामिल होते हैं।

जियो का धमाकेदार ऑफर! महज 'एक रुपये में'मिलेगा 56 जीबी 4जी इंटरनेट डेटा और 28 दिन की ज्यादा वैलिडिटी!

देश में कोरोना का कहर जारी है। कई राज्यों में लॉकडाउन जैसी पाबंदियां लागू हैं। सरकारी और प्राइवेट दफ्तरों के ज्यादातर कर्मचारी घर से ही काम (वर्क फ्रॉम होम) कर रहे हैं। स्कूल, कॉलेज भी बंद हैं। ऐसे में ज्यादातर लोग घर में हैं और मोबाइल पर ज्यादा समय बिता रहे हैं। आज हम आपको एक अच्छे मोबाइल डाटा प्लान की जानकारी देने जा रहे हैं। देश की सबसे बड़ी टेलीकॉम कंपनी जियो ने मोबाइल इंटरनेट डाटा के लिहाज से एक बेहतरीन प्लान लॉन्च किया है। इस प्लान में आप मात्र एक रुपये ज्यादा खर्च कर 56 जीबी 4जी इंटरनेट और 28 दिन की एक्सट्रा वैलिडिटी पा सकते हैं।

हम बात कर रहे हैं जियो के 598 और 599 रुपये वाले प्रीपेड प्लान के बारे में। महज एक रुपये ज्यादा खर्च करने पर आपको 56 जीबी 4जी इंटरनेट मिल जाएगा। जियो के 598 रुपये वाले प्रीपेड प्लान की वैलिडिटी 56 दिन है। इस प्लान में ग्राहकों को रोजाना 2 जीबी डाटा और किसी भी मोबाइल पर फ्री कॉलिंग की सुविधा मिलती है। इसके साथ-साथ कंपनी ग्राहकों को 100 फ्री एसएमएस भेजने की सुविधा भी मुहैया कराती है। वहीं, अगर आप सिर्फ 1 रुपये ज्यादा यानी 599 का प्लान लेते हैं तो इसमें आपकी वैलिडिटी बढ़कर 84 दिनों की हो जाती है। साथ ही हर दिन आपको 2जीबी इंटरनेट डेटा और अनलिमिटेड कॉलिंग का लाभ भी मिलता है। इस प्लान के साथ भी 100 फ्री एसएमएस मिलते हैं। तो साफ है कि महज एक रुपये ज्यादा खर्च करने से आपको 28 दिन की वैलिडिटी और 56 जीबी ज्यादा मोबाइल डेटा का लाभ उठा सकते हैं।

वाट्सऐप को गुलाबी रंग में बदलने की लिंक मिले तो भूलकर भी न करें क्लिक, हैक हो सकता है मोबाइल!

वाट्सऐप आज जिंदगी का अहम हिस्सा बना गया है, लेकिन इससे जुड़े खतरे भी सामने आ रहे हैं। ताजा मामला वाट्सऐप का रंग को बदलने को लेकर है। वाट्सऐप का रंग पिंक करने वाला एक लिंक सोशल मीडिया में भेजा रहा है। दरअसल, यह एक वायरस है जिसकी लिंक पर क्लिक करते ही मोबाइल हैक हो जाता है और धोखेबाजों के हाथ मोबाइल में दर्ज पूरी जानकारी लग जाती है। साइबर विशेषज्ञों ने लिंक के जरिये फोन पर भेजे जा रहे वायरस को लेकर आगाह किया है। इस लिंक में दावा किया जाता है कि वाट्सऐप गुलाबी रंग का हो जाएगा और उसमें नई विशेषताएं जुड़ जाएंगी।

बताया जा रहा वाट्सऐप की आधिकारिक अपडेट लिंक - साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ राजशेखर राजहरिया के मुताबिक, लिंक में दावा किया जाता है कि यह वाट्सऐप की तरह से आधिकारिक अपडेट के लिए है, लेकिन लिंक पर क्लिक करते ही संबंधित उपयोगकर्ता का फोन हैक हो जाएगा और हो सकता है कि वे वाट्सऐप का उपयोग नहीं कर पाए। बकौल राजशेखर राजहरिया, वाट्सऐप पिंक को लेकर सवाधान! एपीके डाउनलोड लिंक के साथ वाट्सऐप ग्रुप वायरस फैलाने का प्रयास किया जा रहा है।

वाट्सऐप पिंक के नाम से किसी भी लिंक पर क्लिक नहीं करे। लिंक को क्लिक करने पर फोन का उपयोग करना मुश्किल हो जाएगा। साइबर सुरक्षा से जुड़ी कंपनी वोयागेर इंफोसेक के निदेशक जितेन जैन ने कहा कि उपयोगकर्ताओं को यह सलाह दी जाती है कि वे गूगल या एप्पल के आधिकारिक एप स्टोर के अलावा एपीके या अन्य मोबाइल एप को इंस्टॉल नहीं करें। इस बारे में वाट्सऐप की सफाई भी आ गई है। वाट्सऐप का कहना है कि, अगर किसी को संदि संदेश या ई-मेल समेत कोई संदेश आते हैं, उसका जवाब देने से पहले पूरी जांच कर ले और सतर्क रुख अपनाएं। वाट्सऐप पर हम लोगों को सुझाव देते हैं कि हमने जो सुविधाएं दी हैं, उसका उपयाग करें और हमें रिपोर्ट भेजे, संपर्क के बारे में जानकारी दे या उसे ब्लॉक करें।

करियर में ग्रोथ चाहिए तो इन टिप्स को जरूर अपनाएं!

दुनिया में शायद ही कोई होगा, जो अपना डिवेलपमेंट नहीं चाहता होगा। करियर के सफर में सही तरीके से हर मोड़ पर सही फैसला लेना बहुत जरूरी होता है। सही प्लानिंग, पॉजिटिव अप्रोच के साथ बढ़ने पर ही मंजिल को आसानी से हासिल किया जा सकता है। साल दर साल यह सफर जारी रहता है और तब जाकर आप करियर के उस पोजिशन पर पहुंच पाते हैं, जहां से पीछे देखने पर आपको सुखद अहसास होता है। इस दौरान आपको हर साल, हर पल ईमानदारी से यह आकलन करना होता है कि कहां कमी रह गई है। खुद से सच बोलना होता है। पिछले साल आपसे क्या कमी रह गई, आपसे बेहतर कोई और नहीं बता सकता है। जरूरी है कि आप उन कमियों को दूर करें और नए रेजॉल्युशन के साथ सफलता की उड़ान भरें। यहां दिए जा रहे टिप्स निश्चित रूप से आपके करियर को निखारने में मददगार साबित हो सकते हैं।

कम्यूनिकेशन के तौर तरीकों को सीखना और अमल में लाना –

जैसे-जैसे आपकी कंपनी अच्छा करने लगती है, वैसे-वैसे उसका विस्तार होता है। यह विस्तार ग्लोबल स्तर पर होता है। ऐसे में आपको नए सिरे से अपने कम्यूनिकेशन लेवल को बेहतर करना होता है। ऐसे में कई बार आपका आउटपुट इस बात पर निर्भर करता है कि आप सामने वाले से किस तरीके का कम्यूनिकेशन रखते हैं। आपको कई बार ई-मेल हैबिट्स को अडॉप्ट करना होता है और उन नई चीजों को अपने लाइफ स्टाइल का हिस्सा बनाना होता है, जो कम्यूनिकेशन का हिस्सा बन रही हैं। इसके अलावा फोन पर इफेक्टिव कम्यूनिकेशन करने के तरीकों को भी सीखना होता है। आपको लगता है कि आप अपने करियर और पर्सनैलिटी में यहां पर कमी महसूस कर रहे हैं, तो आप नए सिरे से अपने कम्यूनिकेशन को बेहतर करने के लिए पहल कर सकते हैं।

नए स्किल से अपडेट करना –

आज के दौर में वर्कप्लेस पर नए स्किल्स की डिमांड बढ़ रही है। वर्किंग कल्चर में उन्हें ज्यादा अहमियत दी जाती है, जो अपने जॉब प्रोफाइल से हटकर स्किल डिवेलप करते हैं। ऐसे में नए साल के मौके पर आप नए कौशल के साथ कदम बढ़ा सकते हैं। इससे ऑफिस में आपकी निर्भरता तो बढ़ती ही है, साथ ही लोग आपकी तारीफ भी करते हैं। कई कंपनियां ऐसी हैं, जो अपने एंप्लॉयर को स्किल को निखारने की सुविधा मुहैया करा रही हैं। आप निश्चित रूप से ऐसे अवसर का फायदा उठाएं।

रिस्क लेना सीखें –

कंपनियां जब बड़े इन्वेस्ट करती हैं, तो उन्हें ऐसे लोगों की तलाश होती है, जो उनके इरादों को सफल बनाएं। ऐसे में आपकी जिम्मेदारी बनती है कि आप आगे बढ़े और ज्यादा से ज्यादा काम करने की कोशिश करें। अगर आपके एम्प्लॉयर ऐसा प्लेटफॉर्म नहीं प्रोवाइड करते हैं, तो आपको खुद से इसके लिए पहल करना होगा। आप फ्रीलांसर हैं या फिर आपका अपना बिजनेस है, तो भी यह आदत फायदेमंद साबित हो सकती है। रिस्क लेकर जब आप सफल होने लगते हैं, तो यह आपके व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाता है।

ऑफिस से बाहर, नेटवर्क करें स्ट्रॉन्ग –

वर्तमान में रेफरल कल्चर हायरिंग का हिस्सा बन गया है। कंपनियां रेफरल कैंडिडेट्स को हायर करने में दिलचस्पी दिखाती हैं। इसके जरिए उन्हें कम मेहनत में उम्दा कैंडिडेट्स मिल जाते हैं और उनका हायरिंग प्रॉसेस आसान हो जाता है। ऐसे में अगर आप अपने पूर्व सहयोगियों और दोस्तों के साथ टच में रहते हैं, तो इससे आपको जॉब में अच्छे अवसर मिलते हैं। वैसे भी ऑफिस से बाहर लोगों के साथ मिलना और उनके साथ क्वॉलिटी टाइम बिताना अच्छी आदत होती है। इसलिए नए साल में यह आपके लिए एक रेजॉलूशन हो सकता है।

टेक्नॉलजी में महारत हासिल करना –

वर्कप्लेस पर प्रॉडक्टविटी को बढ़ाने के लिए कंपनियां स्मार्टफोन और नए ऐप यूज कर रही हैं। ऐसे में टेक्नॉलजी में होने वाले बदलावों के अनुसार खुद को अप टू डेट रखना जरूरी हो गया है। अगर आप एक टेक्नो वर्कर हैं, तो आपके आस-पास हो रहे बदलावों पर नजर रखना और भी ज्यादा जरूरी है। आप टेक्नॉलजी में महारत हासिल करने के बाद ही अपने काम में बदलाव ला सकते हैं और तेजी से तरक्की कर सकते हैं।

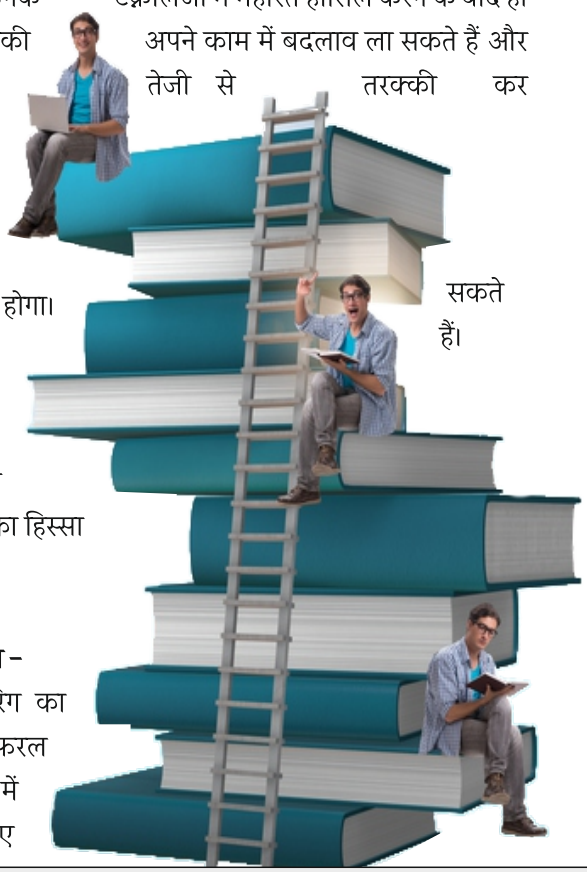

कोरोना पॉजिटिव आने के बाद मरीज को कब होना चाहिए हॉस्पिटल में भर्ती?

भारत में कोरोना वायरस की वजह से हालात गंभीर होते जा रहे हैं और लगातार बढ़ रहे मरीजों की वजह से अस्पताल में बेड की भारी कमी है। डॉक्टर आरटी-पीसीआर टेस्ट में पॉजिटिव पाए जाने वाले मरीजों को जरूरी नहीं होने पर अस्पताल में भर्ती ना होने की सलाह दे रहे हैं, क्योंकि ज्यादातर लोग घर पर ही ठीक हो रहे हैं।

कब होना चाहिए मरीज को अस्पताल में भर्ती?

इस बीच केंद्र सरकार ने एक वीडियो शेयर किया है, जिसमें टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल के निदेशक डॉ। सीएस प्रमेश के सुझावों पर आधारित कुछ सुझाव दिए गए हैं। वीडियो में अच्छे पोषण के अलावा, तरल पदार्थ लेने, योग-प्राणायाम करने, कोविड-पॉजिटिव रोगियों को अपने बुखार और ऑक्सीजन के लेवल को ट्रैक करने की सलाह दी गई है।

कितना होना चाहिए बॉडी में ऑक्सीजन लेवल?

वीडियो संदेश ने कहा गया है, अगर आपके बॉडी में ऑक्सीजन लेवल 94 से ज्यादा है तो आपको अस्पताल में भर्ती होने की जरूरत नहीं है। इसके अलावा ऑक्सीजन लेवल की सटीक जांच के लिए मरीज को अपने कमरे में छह मिनट वॉक करने के बाद टेस्ट का सुझाव दिया गया है। छह मिनट तक चलने के बाद और पहले के ऑक्सीजन लेवल में 4 प्रतिशत या अधिक उतार-चढ़ाव होता है तो हॉस्पिटल से संपर्क करने की सलाह दिया गया है।

कोरोना मरीज को कौन सी दवा लेनी चाहिए?

वीडियो में बताया गया है कि अगर मरीज का ऑक्सीजन लेवल ठीक है और बुखार के अलावा कोई अन्य समस्या नहीं है तो ऐसे मरीज को सिर्फ पैरासिटामोल लेने और खुश रहने की जरूरत है। इसके अलावा उसे अस्पताल में भर्ती होने की भी जरूरत नहीं है

14 दिनों के क्वारंटाइन के दौरान आपको क्या क्या करना चाहिए? - sub heading

होम क्वारंटाइन का मतलब घर पर अपने आप को दूसरे लोगों से अलग कर लेना है। अगर आपको कोरोना वायरस से संक्रमित होने का संदेह है या फिर सर्दी-जुकाम या कोई अन्य लक्षण लग रहा है तो खुद को कम से कम 14 दिनों तक एक कमरे में अपने आप को सबसे अलग कर लें। इससे आपके परिवार में किसी अन्य को वायरस नहीं फैलेगा।

आइये जानते हैं इन 14 दिनों के क्वारंटाइन के दौरान आपको क्या क्या करना चाहिए?

1. थर्मामीटर की मदद से हर 4 घंटे में शरीर का तापमान जांचें।
2. हर 4 घंटे में ऑक्सीजन का स्तर जांचें, ऑक्सीजन का स्तर >95% होना चाहिए।
3. सेलिन (Celin) टैबलेट को दिन में दो बार लें।
4. अस्काज़िन (Ascazin) टैबलेट को दिन में दो बार लें।
5. एसओएस के लिए क्रोसिन (Crocin) टेबलेट लें; अगर बुखार न हो तो इसे न लें।
6. दिन में एक बार 1 बिकासुल (Becosules) कैप्सूल लें।
7. 5 दिन रात में एक 500एमजी अज़ीवोक (Aziwok) टैबलेट लें।
8. 10 दिन रात में एक120एमजी अलेग्रा (Allegra) टैबलेट लें
9. खांसी के लिए, एस्कोरिल डी प्लस (Ascoril D Plus)सिरप को हर 4 घंटे में लें।
10. बहुत सारे तरल पदार्थ और उच्च प्रोटीन आहार लें।
11. समय समय पर भंप लें और बेताडाइन से गार्गल करते रहें।

उपरोक्त बताये गये नियमों का पालन करें और किसी भी आपात स्थिति में पास के कोविड अस्पताल से संपर्क करें।

बरूथिनी एकादशी से वैशाख पूर्णिमा व संकष्टी चतुर्थी तक, मई महीने के व्रत- त्यौहार!

मई 2021

माह में पड़ने वाले व्रत त्योहार की सूची

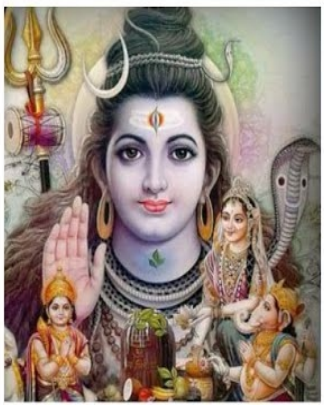

हिंदू धर्म में व्रत और त्यौहारों का विशेष महत्त्व है। पंचांग के मुताबिक़ हर महीनों में व्रत त्यौहार पड़ते है। ये व्रत और त्यौहार लोगों के अंदर सदभावना, सज्जनता, ईमानदारी दयालुता की भावना को पोषित करते हैं। इसके अलावा यह भी मान्यता है कि व्रत रखने से देवी देवताओं की कृपा प्राप्त होती है। जिससे लोगों के कष्ट दूर होते हैं और सभी प्रकार की मनोकामना पूरी होती है। व्रत-त्यौहार पूरे देश में विभिन्न स्थानों पर अलग - अलग तरह से मनाये जाते हैं।

पंचांग के मुताबिक़, हिंदू वर्ष की शुरुआत चैत्र माह से होती है। चैत्र माह 27 अप्रैल को पूर्णिमा तिथि के साथ समाप्त हो रहा है। इसके बाद हिन्दू वर्ष के दूसरे मास वैशाख का प्रारंभ 28 अप्रैल से होगा। जो कि मई माह के अंतिम सप्ताह तक चलेगा।

हिंदू वर्ष के दूसरे मास वैशाख का वर्णन स्कंद पुराण में भी मिलता है। इसमें इसके महत्त्व का वर्णन किया गया है। ऐसी मान्यता है कि वैशाख मास अर्थात मई में पड़ने वाले व्रत को विधि पूर्वक पूर्ण करने से जीवन में सुख समृद्धि बनी रहती है। मई के महीने में कौन-कौन से व्रत और त्यौहार पड़ रहे हैं, इसकी पूरी लिस्ट यहाँ देखें -

03 मई, सोमवारः कालाष्टमी

07 मई, शुक्रवारः बरूथिनी एकादशी, रबीन्द्रनाथ टैगोर जयंती, वल्लभाचार्य जयंती

08 मई, शनिवारः शनि प्रदोष व्रत

09 मई, रविवारः मासिक शिवरात्रि, मातृ दिवस

11 मई, मंगलवार- अमावस्या , भौमवती अमावस्या

12 मई, बुधवारः ईद-उल-फितर

14 मई, शुक्रवारः परशुराम जयंती, अक्षय तृतीय, वृषभ संक्रांति, मातंगी जयंती, रमज़ान

15 मई, शनिवारः विनायक/ वरद चतुर्थी

20 मई, गुरुवार- दुर्गाष्टमी व्रत, बगलामुखी जयंती

21 मई, शुक्रवार- सीता नवमी

22 मईः मोहिनी एकादशी

24 मईः सोम प्रदोष व्रत, प्रदोष व्रत

25 मई, मंगलवार- नृसिंह जयंती

26 मई, बुधवारः बुद्ध पूर्णिमा, वैशाख पूर्णिमा

29 मई, शनिवारः संकष्टी चतुर्थी

मेष– इस माह बिगड़े कार्य में सुधार होगा। धन का आगमन होगा। सभी प्रकार के कार्यों में अनुकूल परिस्थितियां बनेंगे। किन्तु व्यवसाय में दौड़–धूप तथा परेशानियां बनी रहेगी। कार्य एवं अपने कैरियर के प्रति कुछ ना कुछ चिंता बनी रहेगी। सन्तान से कष्ट हो सकता है। अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान रखें। वायरस संक्रमण से बचें।

वृषभ– वृष राशि वालों को शारीरिक हानि के साथ साथ अनियोजित खर्च में वृद्धि होगी। इस समय श्रेष्ठ व्यक्तियों से संपर्क लाभकारी सिद्ध होंगे । भाई बंधुओं के साथ मनमुटाव हो सकता है। सिर दर्द एवं आंखों में कष्ट की संभावना बनी रहेगी। गले में कष्ट हो सकता है।

मिथुन–मिथुन राशि के जातक को इस मास लाभ के साथ साथ व्यर्थ की भागदौड़ बढ़ेगा और खर्च अधिक बढ़ेगा । बेकार के मानसिक तनाव एवं गुप्त चिंता बनी रहेगी। आपका अपने कार्य तथा व्यवसाय संबंधी योजनाओं के बनाने में समय व्यतीत होगा। संतान के कैरियर को लेकर चिंता बनी रहेगी । किसी बिमारी के कारण हॉस्पिटल जाना पर सकता है।

कर्क– इस समय व्यवसाय को लेकर परेशान हो सकते हैं अनेक प्रकार के विघ्न बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। आय में कमी होगी। शत्रु परेशान कर सकते हैं। पारिवारिक परेशानी से आप में क्रोध एवं उत्तेजना बढ़ेगा इस कारण बना हुआ कार्य बिगड़ सकता है । वायरस संक्रमण से बचें। सावधानी बरतें व्यर्थ की चिंता से बचें। बनते कामों में विलंब का योग है ।

सिंह– सिंह राशि वालो के लिए मंगल के विशेष दृष्टि होने से उत्साह एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होगी किंतु क्रोध एवं उत्तेजना के कारण बनता हुआ कार्य बिगड़ सकता है। पिता का सहयोग मिलेगा। परिवार में कुछ मतभेद उभरकर सामने आ सकता है। अपने धैर्य परिश्रम एवं निर्भयता से शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में कामयाबी के योग बनेंगे। किसी बिमारी के कारण हॉस्पिटल जाना पर सकता है। अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान रखें।

कन्या–कन्या राशि वालो के लिए पूर्वार्ध भाग में कुछ सोचे हुई योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी। शुभ मंगल कार्यों में खर्च होगा। उत्तरार्ध में सुख साधनों में वृद्धि होगी। यदि विदेश यात्रा करना चाहते है तो उसमे सफलता मिल सकती है। स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा एवं वृथा मानसिक तनाव बढ़ेगा।

तुला– तुला राशि वालो के लिए इस समय शारीरिक कष्ट तथा मानसिक तनाव बना रहेगा। स्वास्थ्य सम्बी परेशानी होगी अतः खान–पान पर विशेष ध्यान दे। इस मास लाभ कम और खर्च अधिक होंगे। व्यवसाय में हानि होने की संभावना बन रही है। उत्तरार्ध में दिनांक 14 के बाद भी व्यर्थ का भागदौड़ बना रहेगा। प्रॉपर्टी में धन का निवेश कर सकते है। इस समय मन के अंदर भय का माहौल बना रह सकता है।

वृश्चिक–आप के पराक्रम में वृद्धि होगी। आप विघ्न बाधाओं के बावजूद व्यावसायिक कार्यों में सफलता मिलेगी। परिवार में मतभेद हो सकता है। पिता को स्वास्थ्य परेशानी हो सकती है । आपके घर की जिम्मेदारी बढ़ जायेगी। जमीन जायदाद आदि का क्रय विक्रय करने की योजना बनेगी। स्वभाव में उग्रता बनी रहेगी। किसी भी कार्य के लिए जल्दबाजी और उत्तेजना होने से हानि हो सकती है। स्वास्थ्य और धन की चिंता बनी रहेगी।

धनु–धनु लग्न के जातक को स्वयं के कर्म से भाग्योदय होगा। व्यवहार कुशलता से सफलता का योग बनेगा। तीर्थ यात्रा का योग बन रहा है। शारीरिक कष्ट एवं चोट आदि का भय है। पेट सम्बी शिकायत होगी ज्यादा मसालेदार खाना न खाये। सिर दर्द एवं मानसिक तनाव बना रहेगा। संतान का योग बन रहा है।

मकर– राशि स्वामी शनि के लग्न में होने से कुछ शारीरिक कष्ट होगा साथ ही मानसिक तनाव भी हो सकता है। अतः अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दे अन्यथा अत्यधिक परेशानी का सामना करना पर सकता है। विशेष परिश्रम एवं पुरुषार्थ करने से कार्य की सिद्धि होगी। अचानक लाभ तथा हानि का योग हैं। आर्थिक वृद्धि होगी।

कुंभ– शनि इस समय व्यय स्थान में रहेगा तथा गुरु भी शनि के साथ भ्रमण कर रहा है ऐसी स्थिति में व्यर्थ की भागदौड़ बना रहेगा। परिवार में मनमुटाव रहेगा। अपने निकट बंधुओं तथा सगे सम्बयियों से टकराव के हालात पैदा होंगे। इस समय अपने भी पराए जैसा व्यवहार करने लगेगा। आपका अधिकांश समय व्यर्थ के कामों में व्यतीत होगा। यात्रा का योग बन रहा है। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

मीन– इस माह आय के साधन बढ़ेंगे। कार्यस्थल पर तथा सामाजिक परिवेश में उच्च प्रतिष्ठित लोगों से संपर्क बढ़ेगा। भाग्य तथा धन का स्वामी मंगल भी व्यय स्थान में संचार कर रहा है अतः आपके अंदर कार्य के प्रति उत्साह एवं पराक्रम में कमी होगी। भूमि तथा वाहन आदि का क्रय–विक्रय करने की योजना बनेगी। यदि गर्भवती है तो विशेष ध्यान रखे गर्भपात का योग बन रहा है।

कोरोना अलर्ट: क्या सिर्फ चुनाव से किनारा कर रहा कोरोना, लोगों की जिंदगी से खिलवाड़ क्यों?

कोरोना महामारी की दूसरी लहर का प्रकोप काफी तेजी से फ़ैल रहा है। जहां देश में रोज लगभग 3 लाख से अधिक नए संक्रमित मरीजों के मिलने का सिलसिला जारी है वहीं चुनाव के मद्देनजर रैलियों का दौर भी बदस्तूर जारी है। देश में पश्चिम बंगाल में विधानसभा और यूपी में पंचायत चुनाव के दौरान लोग जमकर रैलियों में शामिल हुएं। देश इस समय ऐसे खतरनाक दौर से गुजर रहा है जहां लोगों को अस्पताल में न तो बेड मिल रहा है और न ही ऑक्सीजन की सुविधा। रोजाना ऐसी तस्वीरें आ रही है जहां देश के कई हिस्सों में कोरोना मरीजों का इलाज या तो अस्पताल के बाहर हो रहा या वो अस्पताल के बाहर ही दम तोड़ रहे है। ऐसे में लोग है कि लापरवाही की नयी गाथा लिखने को आतुर है। इतनी भयावह स्थिति के बाद भी लोग इन रैलियों में शामिल होकर अपना और अपने परिवार की जान को सीधे तौर पर खतरे में डाल रहे है। बंगाल में राजनीतिक पार्टियों के नेता रोज बड़ी-बड़ी रैलियां और रोड शो करते दिखें। ऐसे में आने वाले समय में हालात पर काबू पाना मुश्किल हो सकता है। बता दें कि पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव में प्रत्याशी और कांग्रेस नेता रेजाउल हक का कोरोना से निधन हो गया है। रेजाउल हक शमशेरगंज सीट से चुनाव में खड़े थे। चुनाव में आम लोगों की जिंदगी से खिलवाड़ करना कहां तक सही है इसका जवाब अब लोगों को खुद से ही ढूंढना होगा क्योंकि सरकार ने तो ये तय कर दिया कि इस महामारी के दौरान भी चुनाव ज़रूरी है इसलिए अब लोगों को खुद तय करना होगा कि 'चुनाव जरुरी है या लोगों की जिंदगी?'

मरीज की मौत होने के बाद महिला ने बीएचयू अस्पताल के बाहर किया हंगामा, लगाया लापरवाही का आरोप!

जहां एक ओर शहर में कोरोना मरीजों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है, वहीं मरीजों के इलाज को लेकर लापरवाही की नई तस्वीरें भी सामने आ रही है। नया मामला पीएम के संसदीय क्षेत्र वाराणसी का है जहां बीएचयू अस्पताल के बाहर एक महिला ने हंगामा शुरू कर दिया। महिला का आरोप है कि उनके पिता को पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन नही दिया गया जिसके कारण उनकी मौत हो गयी। जिले की रोहनिया निवासिनी महिला अनीता के द्वारा अपने पिता के इलाज में बीएचयू अस्पताल प्रबंधन द्वारा ऑक्सीजन ना दिए जाने से हुई मौत के बाद अस्पताल के बाहर हंगामा किया गया। इसके साथ ही महिला ने आत्मदाह की धमकी भी दी है।

कोरोना के बढ़ते संक्रमण के कारण हरिद्वार में महाकुंभ का हुआ समापन!

देश में लगातार बढ़ रहे कोरोना के आकड़ों से लोगों में भय व्याप्त हो गया है। ऐसे में हरिद्वार में चल रहे महाकुंभ पर भी महामारी की मार पड़ी है। कोरोना के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए निरंजनी अखाड़े ने कुम्भ का समापन करने का ऐलान किया है। निरंजनी अखाड़े के सचिव रविन्द्रपुरी महाराज ने ऐलान किया है कि तीसरे शाही स्नान के बाद कई साधुओं में जुखाम के लक्षण देखने को मिल रहे हैं। ऐसी स्थिति में 17 अप्रैल को महा कुंभ की समाप्ति का निर्णय लिए गया। बता दें कि हरिद्वार में चल रहे महाकुंभ में मौजूद लगभग 2 लाख से अधिक लोगों का कोरोना टेस्ट कराया गया, जिसमें 1701 लोगों की रिपोर्ट पॉजिटिव आयी है। जानकारी के अनुसार कुंभ में शामिल कई लोगों की अभी रिपोर्ट आनी बाकी है जिसमें कोरोना पॉजिटिव लोगों के आंकड़े बढ़ने के आसार हैं।

कोरोना अलर्ट: शवदाह के लिए लग रही लंबी कतारें, अंतिम संस्कार के लिए लंबा इंतजार कर रहे परिजन

देश में कोरोना महामारी के कारण हो रही मौतों का अकड़ा लगातार बढ़ता ही जा रहा है। ऐसे में वाराणसी के हरिश्चंद्र घाट पर अंतिम संस्कार के लिए आने वाले शवों की लम्बी कतारें लग रही है। पिछले महीने से घाटों पर बड़ी संख्या में शवों के आने का सिलसिला जारी है। ऐसे में हरिश्चंद्र घाट पर रोजाना सैकड़ो लाशें शवदाह के लिए आर रहे है, जिससे लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। वहीं कोरोना महामारी से जान गवाने वाले लोगों की लगभग 25-30 सील पैक लाशें भी पहुंच रही है। ऐसे में घाट पर आने वाले शवों के अंतिम संस्कार करने के लिए 4 से 5 घंटों का समय लग रहा है। घाट पर उपस्थित लोगों का कहना है कि शवों को जलाने के लिए लकड़ियों की भी कमी हो रही है।

भारत के 48वें चीफ जस्टिस बने एनवी रामना

बीते माह जस्टिस एमवी रमना ने देश के 48वें चीफ जस्टिस के रूप में शपथ ली। देश के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने उन्हें शपथ दिलाई। आपको बता दें कि जस्टिस रमना ने सीजआई एसए बोबडे की जगह ली है। जस्टिस बोबडे 23 अप्रैल को रिटायर हो चुके हैं। बता दें कि चीफ जस्टिस बोबडे ने ही जस्टिस रमना का नाम राष्ट्रपति को प्रस्तावित भेजा था। जस्टिस रमना आंध्रप्रदेश हाई कोर्ट के पहले ऐसे जज हैं जिन्हें चीफ जस्टिस बनाया गया है। जस्टिस रमना 26 अगस्त 2022 को रिटायर होंगे। जानकारी के लिए बता दें कि जस्टिस रमना का जन्म 27 अगस्त 1957 को आंध्रप्रदेश के कृष्णा जिले में हुआ था। 10 फरवरी 1983 को उन्होंने वकालत शुरू की और 27 जून 2000 को वह आंध्र प्रदेश के हाई कोर्ट में स्थाई जज के तौर पर नियुक्त हुए। जस्टिस रमना को फरवरी 2014 में सुप्रीम कोर्ट का जज भी नियुक्त किया गया था।

पांडिचेरी यूनिवर्सिटी के छात्र का दावा, काली मिर्च और शहद से होगा कोरोना का इलाज - जाने पूरा सच!

कोरोना महामारी ने पूरे विश्वभर में तबाही मचा रखी है। कई देशों ने कोरोना की अलग-अलग वैक्सीन भी तैयार की है, मगर अभी तक किसी भी वैक्सीन के फाइनल नतीजे नहीं आ पाए हैं। वही सोशल मीडिया पर इन दिनों कोरोना वायरस से बचाव के लिए घरेलू उपायों की भरमार लगी हुई है। ऐसे में पांडिचेरी यूनिवर्सिटी के एक छात्र ने शहद और काली मिर्च से कोरोना का इलाज खोजने का दावा किया है। यह दावा लगातार सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इस पोस्ट में यह दावा किया जा रहा है कि पांडिचेरी यूनिवर्सिटी के छात्र रामू ने कोविड-19 के लिए घरेलू उपचार खोज निकाला है, जिसे डब्ल्यूएचओ ने स्वीकृति दे दी है। इस पोस्ट के वायरल होने के बाद इसे तेजी से शेयर किया जा रहा है। मगर आज हम आपको इस वायरल पोस्ट की सच्चाई बताने जा रहे हैं। इस पोस्ट को लेकर विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की वेबसाइट पर मिथ बस्टर्स नाम का एक सेक्शन है, इसमें डब्ल्यूएचओ की टीम ने सोशल मीडिया पर लगातार वायरल हो रहे इस अफवाह का खंडन किया है। इस वेबसाइट पर यह लिखा गया है कि काली मिर्च और शहद से इलाज का कोई भी अपडेट नहीं है। तो यह जान लें और अफवाहों से दूर रहें। काली मिर्च और शहद से कोविड-19 का इलाज होने वाली बातें पूरी तरह से झूठ है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी इस खबर को फेंक बताया है। फिलहाल अभी तक आयुष मंत्रालय ने आयुर्वेदिक तरीकों से इम्यूनिटी सिस्टम को मजबूत करने के लिए कई टिप्स बताए हैं।

पुलिस के द्वारा कुकर से भाप लेने का वीडियो वायरल!

देश में फैले कोरोना वायरस ने लोगों का जीना हराम कर दिया है। बीते वर्ष की तरह इस वर्ष भी लो घरों में कैद हो गए हैं। ऐसे में सोशल मीडिया पर तरह-तरह के घरेलू उपाय के टिप्स दिए जा रहे हैं। ऐसा ही एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें कुछ पुलिस वाले मशीन के जरिए भाप लेते देखे जा रहे हैं। मजे की बात तो यह है कि कुकर से निकलने वाले भाप को पाइपों के द्वारा यह पुलिस वाले ले रहे हैं। फिलहाल यह वीडियो गाजियाबाद का बताया जा रहा है, जिसमें कुछ पुलिस वाले कुकर से निकलने वाले भाप को पाइप के द्वारा ले रहे हैं और खुद को कोरोना वायरस की चपेट में आने से बचा रहे हैं। आपको बता दें कि फिलहाल संकट की इस घड़ी में जहां तक संभव हो घर पर ही रहे और शरीर की इम्यूनिटी सिस्टम को बढ़ाने के लिए घरेलू उपाय को शुरू कर दें। क्योंकि यह इम्यूनिटी सिस्टम ही आपको किसी भी प्रकार की बीमारी से बचाने में सक्षम है।

अनावश्यक घरों से निकलने वालों से पुलिस कर रही अपील, सड़कों पर दें रही गस्त

कोविड-19 के बढ़ते प्रकोप के कारण कई जगहों पर वीकली लॉकडाउन की शुरुआत हो चुकी है। आपको जानकारी के लिए बता दें कि प्रदेश के जिन शहरों में हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं, या जिन शहरों में 2 हजार से अधिक संक्रमितों का आंकड़ा पहुंच रहा है, वहां पर वीकली लॉकडाउन की व्यवस्था की गई है। इसकी जद में अब पीएम का संसदीय क्षेत्र वाराणसी भी आ चुका है। बता दे कि वाराणसी में भी वीकली लॉकडाउन की घोषणा की गई है। इस मौके पर वाराणसी में वरुणा पर डीसीपी विक्रांत वीर, एसीपी अभिमन्यु मांगलिक, कैंट इंस्पेक्टर राकेश सिंह ने मय फोर्स मिनट हाउस से घौसाबाद तक पैदल गस्त कर अनावश्यक घरों से बाहर बिना मास्क निकलने वाले लोगों को चेतावनी दे रहे हैं। सभी पुलिस वाले लोगों को कोरोना के भयावह परिणामों से अवगत कराते हुए अनावश्यक घरों से न निकलने की अपील कर रहे हैं।

कोरोना के नए वैरिएंट पर कितनी असरदार है वैक्सीन?

कोरोना वायरस के संक्रमण से भारत को निजात नहीं मिल रही है। रोजना 3 लाख से अधिक मामले सामने आ रहे हैं। ऐसे में वायरस तेजी से अपना स्वरूप भी बदल रहा है और इसके नए नए वेरिएंट देखे जा रहे हैं। ऐसे में देश में लोगों को दी जा रही वैक्सीन इस नए वेरिएंट के खिलाफ कितनी कारगर है, इस पर एक स्टडी में खुलासा किया गया है? न्यूयॉर्क की रॉकफेलर यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों की एक स्टडी में यह पाया गया कि फाइजर और माडर्ना की वैक्सीन का लोगों पर सकारात्मक असर हो रहा है। स्टडी के मुताबिक फाइजर और माडर्ना का टीका लगवा चुके 417 लोगों पर एक शोध किया गया। इस स्टडी में एक महिला को टीके की दूसरी डोज लेने के 19 दिन बाद और दूसरी महिला को टीका लेने के 36 दिन के बाद संक्रमित पाया गया। यह शोध न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ मेडिसिन में प्रकाशित किया गया था। शोध में यह खुलासा हुआ कि इन दोनों महिलाओं में पर्याप्त मात्रा में न्यूट्रलाइजिंग एंटीबॉडी पाई गई है। इसका सीधा मतलब है कि वैक्सीन अपना काम कर रही है। मगर इसके विपरीत दोनों महिलाओं के संक्रमित होने के पीछे नए वेरिएंट का होना बताया गया है। शोधकर्ताओं के मुताबिक इस नए वेरिएंट जोकि यूके और न्यूयॉर्क वैरिएंट है। दोनों संक्रमित महिलाओं में मिले वायरस का शोध करने पर यह जानकारी मिली कि इस नए वेरिएंट की जीनोम सीक्वेंसिंग यूके और न्यूयॉर्क वेरिएंट के संयोजन का नतीजा है।

चमोली में हिमस्खलन टूटने से हुआ बड़ा हादसा, चपेट में आया बीआरओ कैंप!

उत्तराखंड के चमोली जिले में जोशीमठ सेक्टर के सुमना क्षेत्र में हिमखंड टूटने से बड़ा हादसा हुआ। सड़क निर्माण कार्य में जुटे लोग इस हिमखंड के की जद में आ गए हैं। निर्माण कार्य में जुटे व्यक्तियों को बचाने के लिए सेना द्वारा सघन अभियान जारी किया गया। इस संबंध में सेना ने ट्वीट करते हुए जानकारी दी कि राहत बचाव कार्य के दौरान 384 व्यक्तियों को सुरक्षित बचा लिया गया है, जिनमें से छह की हालत गंभीर बनी हुई है। सेना के द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार लगभग 8 लोगों का शव भी बरामद किया गया है। इसके साथ ही बर्फ के नीचे फंसे केस व्यक्तियों के बचाव के लिए अभियान जारी किया। इसके लिए सेना ने रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू कर दिया है, रात्रि को जारी रेस्क्यू ऑपरेशन को रोकने के बाद आज सुबह पुनः रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया गया। इस पूरी घटना पर मुख्यमंत्री तीरथ सिंह रावत ने हेलीकॉप्टर से प्रभावित क्षेत्रों का निरीक्षण किया। बता दें कि 23 अप्रैल की दोपहर में सुमना के बीआरओ शिविर में हिमस्खलन हुआ, जिससे पूरा शिविर तबाह हो गया। शिविर में सड़क निर्माण में कार्य कर रहे मजदूर, मशीन चालक और अधिकारी मौजूद थे। मगर सेना के अनुसार अभी कई लोग लापता हैं, जिनके लिए रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया गया।

ऑक्सीजन की कमी के लिए केंद्र को पहले ही किया गया था आगाह!

देश में कोरोना मरीज इलाज के इंतजार में दम तोड़ रहे है। इसको लेकर अस्पतालों में भी अफरा-तफरी का माहौल बना हुआ है। जिन मरीजों को सांस लेने में ज्यादा तकलीफ हो रही है उनके इलाज में अस्पतालों को भी दिन रात एक करना पड़ रहा है। ऐसे में सोशल मीडिया पर ऑक्सीजन सिलेंडर की मांग करती अपीलों की भरमार लगी हुई है, जो काफी दयनीय दिखाई दे रही है। कुछ तस्वीरें तो ऐसी भी है जो आपको रुला देने को मजबूर कर देंगी। इसी बीच एक ऐसी खबर आई है जिसमें ये दावा किया गया है कि केंद्र सरकार को ऑक्सीजन की इस कमी के लिए पहले ही आगाह किया गया था। जानकारी के मुताबिक संसद की एक स्थाई समिति ने कोरोनावायरस की दूसरी लहर आने के कुछ महीने पहले ही सरकार को सुझाव दिया था कि अस्पतालों में बेडों की संख्या और ऑक्सीजन का उत्पादन बढ़ाया जाए। स्वास्थ्य संबंधी इस स्थाई समिति ने पिछले साल नवंबर में ही अपनी रिपोर्ट में यह पैरवी की थी कि राष्ट्रीय औषधि मूल्य प्राधिकरण को ऑक्सीजन सिलेंडर की कीमत तय करनी चाहिए ताकि किफायती दर पर इसकी उपलता सुनिश्चित हो सके। बता दें कि इस समिति के अध्यक्ष समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता रामगोपाल यादव है और समिति में भाजपा के 16 सदस्य शामिल है। जानकारी के मुताबिक समिति ने साफ तौर पर कहा था कि समिति सरकार से यह अनुशंसा करती है कि ऑक्सीजन के उत्पादन को बढ़ाया जाए और उन्हें प्रोत्साहित किया जाए ताकि अस्पतालों में ऑक्सीजन की कमी ना हो और इसकी आपूर्ति सुनिश्चित हो सके। साथ ही समिति ने यह भी कहा था कि कोरोना मरीजों की संख्या को देखते हुए अस्पतालों में बेडों की संख्या पर्याप्त नहीं है इसलिए अस्पतालों में बेडों और वेंटिलेटर की पर्याप्त व्यवस्था की जाए ताकि महामारी पर लगाम लगाई जा सके। इसके साथ ही समिति ने स्वास्थ्य व्यवस्था की खराब हालत के मद्देनजर यह सुझाव दिया था कि स्वास्थ्य क्षेत्र में निवेश को बढ़ा दिया जाए।

बोकारो से बनारस पहुंची ऑक्सीजन एक्सप्रेस, ऑक्सीजन की कमी से मिलेगी निजात

कोरोना वायरस की फैलते प्रसार के बीच ज्यादातर मरीजों में ऑक्सीजन की बड़ी कमी देखी गई। ऐसे में वाराणसी के जिलाधिकारी कौशल राज शर्मा के सफल प्रयास के बीच बोकारो से ऑक्सीजन एक्सप्रेस लिक्विड ऑक्सीजन लेकर वाराणसी पहुंची। जानकारी के लिए बता दें कि बनारस पहुंची ऑक्सीजन एक्सप्रेस से एक टैंकर उतारा गया, जिसमें 20 हजार लीटर लिक्विड ऑक्सीजन मौजूद है। इस टैंकर को रामनगर स्थित ऑक्सीजन प्लांट ले जाया गया है, जहां आक्सीजन सिलेंडरों में रिफिलिंग कर इसे अस्पतालों में भेजा जाएगा। इसके अलावा दो टैंकर लखनऊ के लिए भी रवाना किए गए। बता दें कि इससे पहले भी 20 हजार लीटर लिक्विड ऑक्सीजन बोकारो से बनारस बाई रोड पहुंचा था, जिससे शहर भर के मरीजों को काफी राहत मिली थी। वही दो टैंकर और भी सड़क मार्ग से वाराणसी के लिए भेजे गए हैं।

देश में ऑक्सीजन की कमी को देखते हुए भारतीय वायु सेना ने संभाला मोर्चा

देश में कोरोना वायरस के बढ़ते प्रकोप के बीच कोरोना मरीजों में ऑक्सीजन की कमी साफ देखी जा रही है। देश के कई हिस्सों में जारी ऑक्सीजन संकट के बीच अब भारतीय वायुसेना ने मोर्चा संभाल लिया है। वायुसेना के विमान देश के अलग-अलग हिस्सों में ऑक्सीजन की कमी को पूरा करने के लिए ऑक्सीजन कंटेनर्स पहुंचा रहे हैं। वायु सेना के इस प्रयास से देश में फैले संकट को कंट्रोल करने का प्रयास किया जा रहा है। आपको बता दें कि वायुसेना के C-17 और IL-76 विमानों ने देशभर में ऑक्सीजन सेवा का जिम्मा उठाया है। भारतीय वायु सेना की यह विमान देशभर के स्टेशनों पर एयरलिफ्ट के जरिए ऑक्सीजन टैंकरों को पहुंचा रहे हैं। जानकारी के मुताबिक बीते दो दिनों में खाली क्रायोजेनिक ऑक्सीजन कंटेनर को एयरलिफ्ट किया गया, जिसमें एक कंटेनर को वेस्ट बंगाल के पनागर में एयरलिफ्ट किया गया। देश के हालात पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ऑक्सीजन आपूर्ति के लिए बैठक की थी, जिसके बाद से ही युद्ध स्तर पर संसाधनों को पहुंचाने पर काम किया जा रहा है।

मुंबई के विरार कोविड अस्पताल में लगी आग, 13 कोरोना मरीजों की हुई मौत

मुंबई के विरार इलाके में स्थित विजय वल्लभ कोविड अस्पताल में अचानक से आग लग गई। आग लगने के कारण 13 कोरोना मरीजों की मौत भी हो गई। जानकारी के अनुसार मुंबई के विरार स्थित विजय वल्लभ हॉस्पिटल में 15 मरीज आईसीयू में भर्ती थे, जिसमें 13 की मौत हो गई है। फिलहाल शॉर्ट सर्किट को आग का कारण माना जा रहा है। इस इस संबंध में अस्पताल के सीईओ दिलीप शाह ने बताया कि इस घटना में 13 लोगों की मौत हुई है। उन्होंने बताया कि अस्पताल में करीब 90 मरीज उस समय मौजूद थे, जब आग लगी। साथ ही बताया कि जिन मरीजों को ऑक्सीजन की जरूरत है उन्हें दूसरे अस्पताल में शिफ्ट किया जा रहा है। शाह ने बताया कि आईसीयू वार्ड में कुछ आग जैसा गिरा और 1- 2 मिनट में ही आग फैल गई। फायर सेफ्टी होने के बावजूद भी आग फैल गई। वहीं इस घटना में मृतकों के परिजनों लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और महाराष्ट्र के सीएम उद्धव ठाकरे ने मुआवजे का ऐलान किया है। प्रधानमंत्री राहत कोष से मृतकों के परिजनों को 2 लाख रूपये और गंभीर रूप से घायलों को 50 हजार रूपये की अनुग्रह राशि देने का ऐलान किया गया है। जबकि मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने मरीजों के परिजनों को 5 लाख रूपये और गंभीर रूप से घायल मरीजों के लिए 1 लाख रूपये के मुआवजे की घोषणा की है।

ऑक्सीजन की कमी के कारण दूसरे अस्पतालों में शिफ्ट हो रहे मरीज

शहर में कोरोना महामारी का प्रकोप लगातार जारी है। ऐसे में कोरोना मरीजों को लेकर हो रही अव्यवस्था भी बढ़ती ही जा रही है। जिला प्रशासन के लाख दावों के बाद भी मरीजों की बदहाली साफ तौर पर देखी जा सकती है। आपको बता दें कि वाराणसी शहर से हैरान कर देने वाली तस्वीरें सामने आ रही हैं। वाराणसी के एक निजी अस्पताल में ऑक्सीजन की कमी होने के कारण मरीजों को बीएचयू में शिफ्ट किया जा रहा है। अस्पताल प्रबंधन के मुताबिक अस्पताल में सिर्फ 2 घंटे का ही ऑक्सीजन बचा हुआ था, जिसके कारण मरीजों को दूसरे अस्पताल में शिफ्ट किया जा रहा है। वाराणसी के अस्पतालों में लगातार ऑक्सीजन की कमी देखी जा रही है, जिसके कारण मरीजों को दरबदर भटकना पड़ रहा है। बता दे कि ऑक्सीजन की कमी के कारण अब तक कई मरीज अपनी जान गंवा चुके हैं।

ऑक्सीजन की कमी को लेकर दिल्ली हाई कोर्ट ने केंद्र सरकार को लगायी लताड़

केंद्र सरकार के इंडस्ट्रीज की ऑक्सीजन संप्लाई करने पर दिल्ली हाईकोर्ट ने रोक लगाने के निर्देश दिए हैं। मैक्स अस्पताल में ऑक्सीजन की कमी को लेकर दायर की गई याचिका पर सुनवाई करते हुए को कोर्ट ने यह आदेश दिया। कोर्ट ने साफ तौर पर कहा कि ऑक्सीजन पर पहला हक मरीजों का है। जस्टिस विपिन सांघी और रेखा पल्ली की बेंच ने सुनवाई करते हुए कहा कि मरीजों के लिए ऑक्सीजन की आपूर्ति सुनिश्चित कराना केंद्र सरकार की जिम्मेदारी है। कोर्ट ने केंद्र सरकार को लताड़ लगाते हुए कहा कि सरकार इतनी लापरवाह कैसे हो सकती है? कोर्ट ने कहा कि आप गिगिड़ाइये, उधार लीजिए या चुराइए लेकिन ऑक्सीजन उपल कराइए, क्योंकि हम मरीजों को मरते नहीं देख सकते। नासिक में ऑक्सीजन टैंक लीक होने की वजह से हुई मौतों पर कोर्ट ने नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि उद्योग ऑक्सीजन की आपूर्ति के लिए कई दिनों तक इंतजार कर सकते हैं, लेकिन मौजूदा स्थिति काफी संवेदनशील है। कोर्ट ने कहा कि अगर टाटा कंपनी अपने ऑक्सीजन कोटे को डायवर्ट कर सकती है, तो दूसरे ऐसा क्यों नहीं कर सकते। केंद्र सरकार को लताड़ लगाते हुए कोर्ट ने कहा कि यह हास्यास्पद है। इसका मतलब है कि सरकार के लिए मानव जीवन महत्वपूर्ण नहीं है। ऑक्सीजन खरीदने के मामले को लेकर कोर्ट ने कहा कि हमें बताया गया था कि सरकार ऑक्सीजन खरीदने की कोशिश कर रही है, उस मद में क्या हुआ? सरकार को सच्चाई बतानी ही होगी।

नासिक में लीक हुई ऑक्सीजन टैंक, 22 की हुयी मौत!

देश में कोरोनावायरस की दूसरी लहर अपने चरम पर है। जहां एक ओर मरीजों को सांस लेने में दिक्कत हो रही है, जिसके कारण अस्पतालों में ऑक्सीजन सिलेंडरों की कमी हो गई है, वही महाराष्ट्र के नासिक के एक अस्पताल में बड़ा हादसा सामने आया। दरअसल नासिक के जाकिर हुसैन अस्पताल में ऑक्सीजन टैंक लीक हो गया। ऑक्सीजन टैंक लीक होने के कारण अब तक 22 लोगों की मौत हो चुकी है। नासिक में हुए इस घटना पर बोलते हुए महाराष्ट्र के स्वास्थ्य मंत्री राजेश टोपे ने बताया की ऑक्सीजन लीक हादसे में अब तक 22 लोगों की जानें गई हैं, जबकि कई लोगों की स्थिति अभी गंभीर बताई जा रही है। ऐसे में जाकिर हुसैन अस्पताल में ऑक्सीजन की कमी के चलते 4 मरीजों की भी मौत हो चुकी है, यह सभी मरीज वेंटिलेटर पर थे। हादसा इतना बड़ा था कि रेस्क्यू के लिए फायर ब्रिगेड टीम को बुलाना पड़ा, तब जाकर कहीं स्थिति पर काबू पाया गया।

कोरोना के खतरनाक प्रकोप को देखते हुए योगी सरकार का बड़ा फैसला!

कोरोना की खतरनाक लहर को देखते हुए उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने बड़ा फैसला लिया है। इसके मुताबिक अब उत्तर प्रदेश के सभी जिलों में प्राइवेट लैबों को भी कोरोना टेस्ट करने की अनुमति दी गई है। योगी सरकार ने यह फैसला इसलिए लिया है क्योंकि जो भी लोग कोविड टेस्ट करा रहे हैं उनकी रिपोर्ट काफी देर से आ रही है, जिसके मद्देनजर यह फैसला लिया गया है। ताकि लोगों की रिपोर्ट समय से आ सके और उनका समय से इलाज हो सके। इसके अलावा कालाबाजारी को रोकने के लिए भी कोरोनावायरस के टेस्ट के लिए शुल्क भी निर्धारित कर दिया गया है। जो लोग लैब में जाकर टेस्ट करा रहे हैं उनके लिए 700 रुपये और जो लोग घर पर कोविड का टेस्ट करा रहे हैं उन्हें 900 रुपये का भुगतान करना होगा। इसके साथ ही योगी सरकार ने दूसरा बड़ा फैसला करते हुए कहा है कि जिन मरीजों को ऑक्सीजन की वजह से दिक्कत हो रही है, उनके लिए प्रदेश के सभी जिलों के अस्पतालों को यह निर्देश दिया गया है कि सभी के पास कम से कम 36 घंटे के लिए ऑक्सीजन का बैकअप रखना अनिवार्य होगा। इसके साथ ही ऑक्सीजन का उत्पादन करने वाली 90 छोटी इंडस्ट्रीज को सीधे 285 अस्पतालों से सीधे कनेक्ट किया गया है ताकि किसी भी मरीज को ऑक्सीजन की कमी ना हो सके। इसके अलावा जितने भी कोविड के बड़े अस्पताल हैं, सरकार उनकी सीधे मोनिटरिंग भी कर रही है। इसके अलावा बाजार में मिलने वाली जीवन रक्षक दवाइयां जिनके बारे में यह कहा जा रहा है कि यह दवाइयां अस्पतालों और बाजारों से नदारद हैं और यदि कहीं मिल भी रही हैं तो बहुत महंगे दामों पर मिल रही है। इसके लिए भी सरकार ने दिशा निर्देश जारी किए हैं कि यह जीवन रक्षक दवाइयां सभी जगह आसानी से उपल होनी चाहिए और इसकी कालाबाजारी करने वालों पर एनएसए के तहत कार्रवाई की जानी चाहिए। इसके साथ ही सरकार ने होम आइसोलेशन में रह रहे मरीजों के लिए हेल्पलाइन नंबर जारी किया है

मुस्लिम महिलाओं ने की राम आरती, विश्व कल्याण के लिए मांगी मन्नतें

बीते माह पूरे देश में रामनवमी हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। ऐसे में वाराणसी में राम नवमी के अवसर पर अनोखा नजारा देखने को मिला, जब मुस्लिम महिलाओं ने कोरोना की गाइडलाइन का पालन करते हुए रामनवमी पर राम आरती और श्री राम प्रार्थना में हिस्सा लिया। इस अवसर पर हिंदू और मुस्लिम महिलाओं ने एक साथ मिलकर राम नवमी का पर्व मनाया। इस अवसर पर मुस्लिम महिलाओं ने सच्चे मन से भगवान राम की आरती गाई और समाज को एक अनूठा पैगाम दिया कि हम सबको साथ मिलकर सभी धर्मों का सम्मान करना चाहिए। इस मौके पर मुस्लिम महिला फाउंडेशन की नाजनीन अंसारी ने बताया कि भगवान श्री राम हम सभी के पूर्वज हैं और हम पिछले 15 सालों से भगवान श्री राम की पूजा अर्चना कर रहे हैं। हालांकि उन्हें ऐसा करने पर कई बार कट्टरपंथियों ने धमकी तक दे डाली है। नाजनीन अंसारी ने कहा कि जिस प्रकार से भगवान श्री राम के अयोध्या में जन्म लेने पर पूरा विश्व जगमगा उठा था, ठीक उसी प्रकार आज संसार में फैले सांप्रदायिकता के अंधेरे को हमने मिटाने का एक छोटा सा प्रयास किया है। साथ ही उन्होंने कहा कि विश्व भर में फैले इस खतरनाक महामारी के प्रकोप को रोकने के लिए हमने भगवान श्रीराम से कामना की है।

क्या आपको भी सांस लेने में हो रही है तकलीफ? आयुष मंत्रालय की माने सलाह!

देश में फैल रहे कोरोना वायरस की दूसरी लहर काफी खतरनाक साबित हो रही है। ज्यादातर मरीजों के शरीर में ऑक्सीजन की कमी देखी जा रही है, जिसके कारण लोगों को सांस लेने में तकलीफ हो रही है। यही कारण है कि देश के ज्यादातर अस्पतालों में ऑक्सीजन नहीं मिल पा रहा है। सांस की तकलीफ से ग्रसित ज्यादातर मरीज ऑक्सीजन न मिल पाने के कारण काल के ग्राह में समाते जा रहे हैं। ऐसे में जिला संयुक्त औषधालय की आयुर्वेदिक चिकित्सक डॉ कुमकुम ने बताया कि यदि सांस लेने में तकलीफ हो रही हो तो, सबसे पहले घरेलू नुस्खे अपनाएं। उन्होंने बताया कि जिन्हें भी ऑक्सीजन की कमी महसूस हो रही है वह साफ कपड़े में अजवाइन, मंगरेल और लौंग रख कर उसे मसल दे और उसकी पोटली बनाकर के उसे सूंघते रहे। ऑक्सीजन के लिए यह बेहद ही कारगर उपाय है। उन्होंने बताया कि यह काफी फायदेमंद साबित होगा, इसके उपयोग से श्वसन तंत्र सक्रिय रहेगा और कुछ देर तक किया नुस्खा आजमाने से सांस लेने में हो रही तकलीफ दूर हो जाएगी। उन्होंने बताया कि हर 1-2 घंटे पर यह नुस्खा आजमाएं जब तक आपके सांस की तकलीफ दूर नहीं हो जाती।

NEWS
TOP HEADLINES

वैक्सीन को लेकर देश में आयी अच्छी खबर

कोरोनावायरस की दूसरी खतरनाक लहर के बीच एक अच्छी खबर ने दस्तक दी है। सरकार वैक्सीन को आयात करने पर 10 % कस्टम ड्यूटी कम कर सकती है। ऐसे में अब निजी कंपनियों को भी वैक्सीन इंपोर्ट करने की मंजूरी दी जा सकती है। सरकार के इस फैसले से देश में वैक्सीन की कमी नहीं होगी। जानकारी के लिए बता दें कि भारत सरकार ने रूस की वैक्सीन स्पूतनिक-वी को आयात करने की मंजूरी दे दी है, ऐसे में यह वैक्सीन जल्द ही भारत में आ सकती है। इसके अलावा सरकार ने फाइजर माडर्ना और जॉनसन एंड जॉनसन से भी अपनी वैक्सीन भेजने की बात कही है। ऐसे में सरकार प्राइवेट कंपनियों को भी वैक्सीन के आयात की मंजूरी देने पर विचार कर रही है। बता दें कि अभी तक कई देश वैक्सीन के आयात पर 10-20 % तक इंपोर्ट ड्यूटी वसूल रहे हैं, इनमें नेपाल और पाकिस्तान जैसे देश शामिल है। इसके अलावा लैटिन अमेरिका, अर्जेंटीना और ब्राजील भी कोविड-19 के आयात पर 20% तक इंपोर्ट ड्यूटी वसूल रहे हैं। भारत में कोई वैक्सीन पर बेसिक कस्टम ड्यूटी 10% है और इस पर भी 10% सोशल वेलफेयर सरचार्ज और 5% आईजीएसटी वसूला जाता है। देश में वैक्सीन की कमी ना हो इसके लिए सरकार ने 4500 करोड़ रुपयों की धनराशि का भुगतान किया है इसमें सिरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया को 3000 करोड़ रूपये और भारत बायोटेक को 1500 करोड़ रुपए दिए गए हैं। वैक्सीन की कमी ना हो इसके लिए यह पैसा 2-3 महीने तक वैक्सीन की सप्लाई के लिए एडवांस के तौर पर दिया गया है। इसके अलावा सबसे प्रभावित राज्यों को सरकारी तेल कंपनी इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड और भारत पेट्रोलियम कारपोरेशन लिमिटेड की तरफ से मुफ्त ऑक्सीजन देने का ऐलान किया गया है। इन कंपनियों ने दिल्ली, हरियाणा और पंजाब के अस्पतालों में 150 टन ऑक्सीजन की सप्लाई शुरू भी कर दी है।

भारत के पूर्व क्रिकेट कप्तान एमएस धोनी के माता-पिता हुए कोरोना पॉजिटिव

देश में कोरोनावायरस की दूसरी खतरनाक लहर के बीच लोगों के कोरोना वायरस के संक्रमण से ग्रसित होने की खबरें भी तेजी से आ रही है। ऐसे में भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी के पिता पान सिंह धोनी और माता देवकी देवी भी कोरोना पॉजिटिव हो गए हैं। दोनों का ही रांची के एक निजी अस्पताल में इलाज जारी है। फ़िलहाल डॉक्टरों के मुताबिक अभी दोनों की स्थिति ठीक है, उनका ऑक्सीजन लेवल भी सामान्य है। दोनों का सिटी स्कैन भी कराया गया है, जिससे यह पता चला है कि संक्रमण अभी फेफड़ों तक नहीं पहुंचा है।

हाई कोर्ट के लॉक डाउन के फैसले पर योगी सरकार को सुप्रीम कोर्ट ने दी राहत

उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों में तेजी से फैल रहे कोरोना संक्रमण को देखते हुए प्रयागराज हाईकोर्ट ने योगी सरकार को लॉक डाउन लगाने का निर्देश दिया था। हाईकोर्ट के इस फैसले के खिलाफ योगी सरकार ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया, जिसपर सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट के फैसले पर रोक लगाते हुए योगी सरकार को राहत दी है। मगर कोर्ट ने साफ तौर पर कहा है कि हाईकोर्ट के ऑब्जर्वेशन को ध्यान में रखें।

सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद योगी सरकार ने पूरे प्रदेश में सप्ताह के 2 दिन शनिवार और रविवार को लॉक डाउन लगाने का फैसला किया है। इसके अलावा योगी सरकार ने दिल्ली की सीमा से वापसी कर रहे प्रवासियों के पर्याप्त बसों की व्यवस्था कराने की बात कही है। योगी सरकार ने स्वास्थ्य विभाग को सतर्कता बरतने के निर्देश दिए और दवाओं की कालाबाजारी करने वालों पर कठोर कार्यवाई के निर्देश दिए हैं।

एम्स के डॉक्टर रणदीप गुलेरिया ने बताया कोरोना के प्रसार की असली वजह!

देश में खतरनाक तरीके से फैल रहस्य कोरोना के संक्रमण के मामले पर दिल्ली एम्स के डॉक्टर रणदीप गुलेरिया ने बड़ा खुलासा किया है। उन्होंने कोरोनावायरस की खतरनाक लहर के लिए खुद लोगों को ही जिम्मेदार बताया है। रणदीप गुलेरिया ने कहा कि जनवरी और फरवरी में टीकाकरण शुरू होने के बाद संक्रमण के मामले कम होने लगे थे, मगर लोगों ने कोरोनावायरस के मुताबिक व्यवहार करना बंद कर दिया। उसी समय यह वायरस में म्यूटेशन हुआ और यह ज्यादा संक्रामक हो गया। डॉक्टर गुलेरिया ने बताया कि संक्रमण के मामले बढ़ने की वजह से देश में स्वास्थ्य व्यवस्था पर अधिक दबाव पड़ा है। जहां एक ओर अस्पतालों में बेड की संख्या बनाए रखने और संसाधनों को लेकर स्वास्थ्य विभाग को सतर्कता बरतनी पड़ रही है, वही इस समय देश में बहुत सारी धार्मिक और चुनावीं गतिविधियां चल रही हैं। उन्होंने कहा कि लोगों को खुद समझना होगा कि उनकी जिंदगी कितनी कीमती है। लोगों को इस समय इस प्रकार से

व्यवहार करना चाहिए कि न तो उनकी धार्मिक भावनाएं आहत हो और ना ही कोरोना वायरस की गाइड लाइन का उल्लंघन हो। उन्होंने वैक्सीनेशन पर बोलते हुए कहा कि हमें यह बात ध्यान रखनी होगी कि कोई भी वैक्सीन आपको 100% सुरक्षा नहीं दे सकती। ऐसा भी हो सकता है कि आपको वैक्सीन लगने के बाद भी आप संक्रमित हो जाएं। लेकिन वैक्सीन लगवाने के बाद शरीर में मौजूद एंटीबॉडी के कारण वायरस का शरीर पर बहुत बुरा असर नहीं होगा और व्यक्ति के गंभीर होने की आशंकाएं भी कम हो जाएंगी।

कोविड-19 के मद्देनजर वाराणसी मोबाइल समिति ने दो दिन बंदी की घोषणा की

कोविड-19 की दूसरी खतरनाक लहर ने अब अपना भयावह स्वरूप इख्तियार कर लिया है। इस महामारी का प्रभाव आम जनमानस से लेकर बड़े उद्योगों तक देखा जा सकता है। ऐसे में वाराणसी मोबाइल समिति के अध्यक्ष अंजनी कुमार मिश्रा द्वारा यह बताया गया कि कोविड-19 बीमारी से हमारा देश बुरी तरीके से ग्रसित होता जा रहा है, इस बीमारी ने न जाने कितने घरों को उजाड़ दिया। कोरोना वायरस जैसी वैश्विक बीमारी को देखते हुए मोबाइल समिति ने आहत होकर दो दिन सोमवार ओर मंगलवार को अपनी-अपनी दुकानों को बंद रखने का फैसला लिया। वही सभी मोबाइल दुकानदारों ने इस फैसले का स्वागत भी किया और 2 दिन दुकान बंद करने का निर्णय लिया है।

बाबा महाश्मशान के श्रृंगार महोत्सव में नगर वधुओं ने किया नृत्य, बाबा को प्रसन्न करने की परंपरा 354 वर्ष पुरानी!

धर्म और अध्यात्म की नगरी काशी अपने आप में ही कई रहस्य समेटे हुए है। ऐसे में नवरात्रि की पंचमी तिथि से बाबा महाश्मशान नाथ का तीन दिवसीय श्रृंगार महोत्सव की शुरुआत होती है। इस महोत्सव के अंतिम दिन नगर वधुओं के द्वारा बाबा को नृत्यांजलि देने की प्रथा है। हालांकि इस बार कोरोना महामारी के बढ़ते प्रकोप के कारण आम जनमानस को महोत्सव में शामिल होने की इजाजत नहीं थी। मणिकर्णिका घाट पर धधकती चिताओं के बीच नगर वधुओं ने बाबा को प्रसन्न करने के लिए सुध-बुध खोकर नृत्य किया। मान्यता है कि हर वर्ष इस परंपरा का निर्वाहन किया जाता है। यह परंपरा 354 वर्षों से चली आ रही है। इस परंपरा की शुरुवात राजा मानसिंह ने की थी। मान्यता है कि नगर वधुयें बाबा के समक्ष नृत्य करती है ताकि अगले जन्म में उन्हें किन्नर की योनि से मुक्ति मिल सकें।

लखनऊ में महामारी का प्रकोप जारी, रक्षामंत्री ने भेजी ऑक्सीजन की बड़ी खेप

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में कोरोना महामारी का प्रकोप लगातार जारी है। ऐसे में लखनऊ अस्पतालों में बेड और ऑक्सीजन की कमी हो रही है जिसके मद्देनजर रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने राजधानी में ऑक्सीजन की बड़ी खेप भेजी है। इसके अलावा डीआरडीओ की सहायता से 250 बेड का एक बड़ा अस्पताल भी तैयार किया जा रहा है। लखनऊ में कोरोना मरीजों के आंकड़े काफी तेजी से बढ़ रहे है ऐसे में अस्पतालों में बेड और ऑक्सीजन सिलेंडरों की कमी होने लगी है। ऑक्सीजन को लेकर राजधानी में बड़ा संकट मंडरा रहा है जिसके लिए राजनाथ सिंह ने पहल की है। इस संबंध में इंडियन इंडस्ट्रीज एसोसिएशन लखनऊ डिवीजन के चेयरमैन सूर्य प्रकाश हवेलिया ने जानकारी दी कि राजधानी के छह बॉटलिंग यूनिट को छत्तीसगढ़, राउरकेला, मोदीनगर, काशीपुर आदि से लिक्विड ऑक्सीजन टैंकर के जरिए सप्लाई होती है, मगर कुछ दिनों से इसकी सप्लाई में कमी हो गई है। इसके चलते उद्यमी गैस सिलेंडर नहीं भर पा रहे हैं।

NEWS

TOP HEADLINES

कोरोना संकट से निजात पाने के लिए हुआ सर्प प्रतिष्ठा और सर्प पूजन!

देश में फैले कोरोना के संकट को देखते हुए वाराणसी में तुलसी घाट स्थित लोलार्क कुंड पर सर्प प्रतिष्ठा व सर्प पूजन किया गया। केंद्रीय ब्राह्मण महासभा राष्ट्रीय महासचिव व महासभा सचिव विश्व पुरोहित ज्योतिषाचार्य पं अजीत मिश्रा के नेतृत्व में ये पूजन का प्रारंभ किया गया। इस संबंध में पं अजीत मिश्रा ने बताया कि 1 अप्रैल से राहु वृषभ राशि और केतु वृश्चिक राशि में और सभी ग्रह उनके अंदर होने के कारण देश सर्प दोष से ग्रसित है। इसका प्रमुख कारण है कि सर्प को आहार बनाना। उन्होंने बताया कि भारत में तो सर्प की पूजा की जाती है मगर खासकर चीन में सर्प को आहार समझकर आहार बनाया जाता है और सर्प की सर्वाधिक हत्या की जाती है, जिसके कारण भगवान शिव के गले में विराजमान सर्प कुपित होकर विष निकाल रहे है। पं अजीत मिश्रा ने देश के सभी पुरोहितों और धर्माचार्यों से निवेदन किया है कि इस संकट के समय में महामृत्युंजय मंत्र, महा गायत्री मंत्र और धन्वंतरि पाठ करें ताकि इस महामारी का प्रकोप कम हो सकें। उन्होंने बताया कि इसी वजह से सर्प पूजन किया जा रहा है। उन्होंनेआगे बताया कि 15 अप्रैल के बाद मंगल ग्रह के मिथुन राशि में प्रवेश करने के बाद सर्प दोष से निवारण पाने का अच्छा अवसर है। साथ ही कहा कि एक माह के बाद मंगल कर्क राशि या सिंह राशि में प्रवेश कर रहा है, जिसके बाद कोरोना महामारी का संकट टलने के आसार बन रहा है।

वर्ग-पहेली!

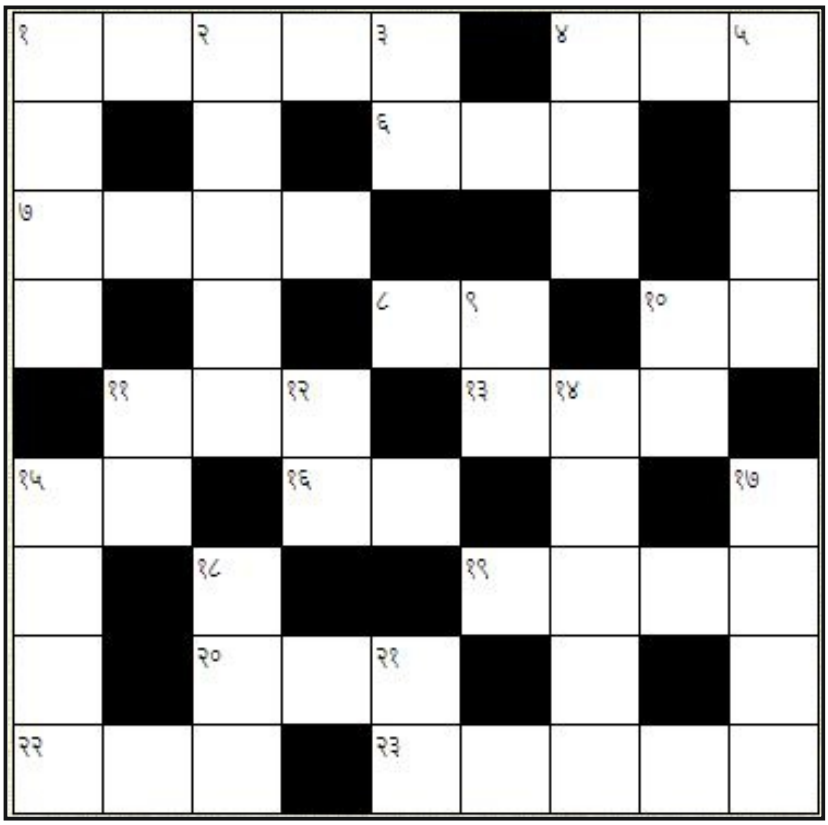

ऊपर से नीचे-

१.भगवान बुद्ध (४)
२.कानाफूसी (५)
३.नियत, निश्चित (२)
४.बुराई (३)
५.जहाँ ईद की नमाज होती है (४)
९.ब्राह्मण (२)
१०.लगाम (२)
११.शत्रु (२)
१२.छोटा (२)
१४.भारतीय होने की स्थिति या भाव (५)
१५.योद्धा (४)
१७.आतंककारी (४)
१८.प्रतिध्वनित होना (३)
२१.साँस (२)

बाएँ से दाएँ-

१.जैसा कहा जाता है (५)
४.हल्की रजाई (३)
६.समुचित (३)
७.जो सही न हो, गलत (४)
८.चित्र, स्वरूप (२)
१०.मार्ग (२)
११.विचार (३)
१३.सुंदर दिखने वाला, चटकीला (३)
१५.काँटा (२)
१६.मन के भावों को छिपाने वाला (२)
१९.जिसकी प्रतीक्षा है (४)
२०.वधिक (३)
२२.निर्माता, बनाने वाला (३)
२३.ममतालु (३)

उत्तर-

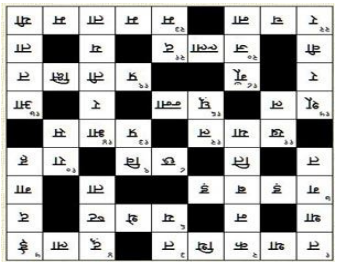

मिथिलेश पटेल
(संरक्षक)

राजू श्रीवास्तव
(संपादक)

रमेश उपाध्याय
(वरिष्ठ पत्रकार)

विकास श्रीवास्तव
(पत्रकार)

सुधीर कुमार गुप्ता
(वीडियो एडिटर)

निमांषी पांडेय
(वीडियो एडिटर)

धीरेन्द्र प्रताप
(छायाकार)

रवि पटेल
(कंटेंट एडिटर)

प्रियांशी श्रीवास्तव
(कंटेंट एडिटर)

अमित यादव
(मार्केटिंग)

कुलदीप कपूर
(संवाददाता)

मो. कैफ
(संवाददाता)

HOTEL UTSAV RESIDENCY

FACILITIES:

- Take the Charge & Control of or Centralized Air Conditioned Rooms.
- For good picture quality & clear visibility, enjoy our 32" LCD Television.
- 24 Hours Room Service.
- Doctor on Call.
- Laundry Services.
- Medical Centre.
- Free Wifi.

LOCATION:

BABA COMPLEX, BHU ROAD, LANKA, VARANASI

Email: hotelutsavresidency@gmail.com
Tel. 0542-2367080

BABA RESTAURANT

The Restaurant serves everything from traditional Indian, Chinese and Continental Cuisine dishes.

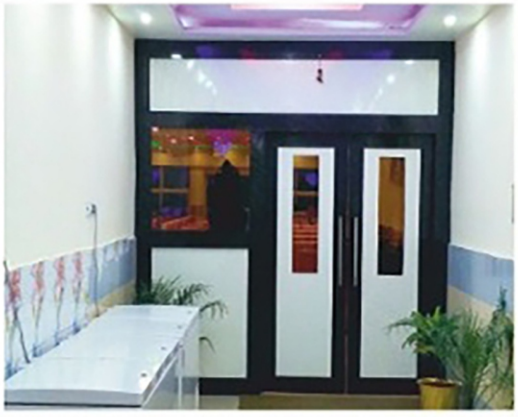

go mmt GROUP
make my trip | goibibo

Suny's Bakery

Homey·Delicious·Fresh

HAPPINESS IS....

....a nice hot cup of tea & a packet of biscuit

Atta

Till

Jeera

Coconut

Ajwain

Khalawapur, Khamaria, Bhadohi UP- 221306

8081708047 sunysbakery@gmail.com